पूसाराम भजन विलास

श्री स्वामी ईसररामजी महाराज एवं
श्री स्वामी पूसारामजी महाराज कृत

अनुभव वाणी
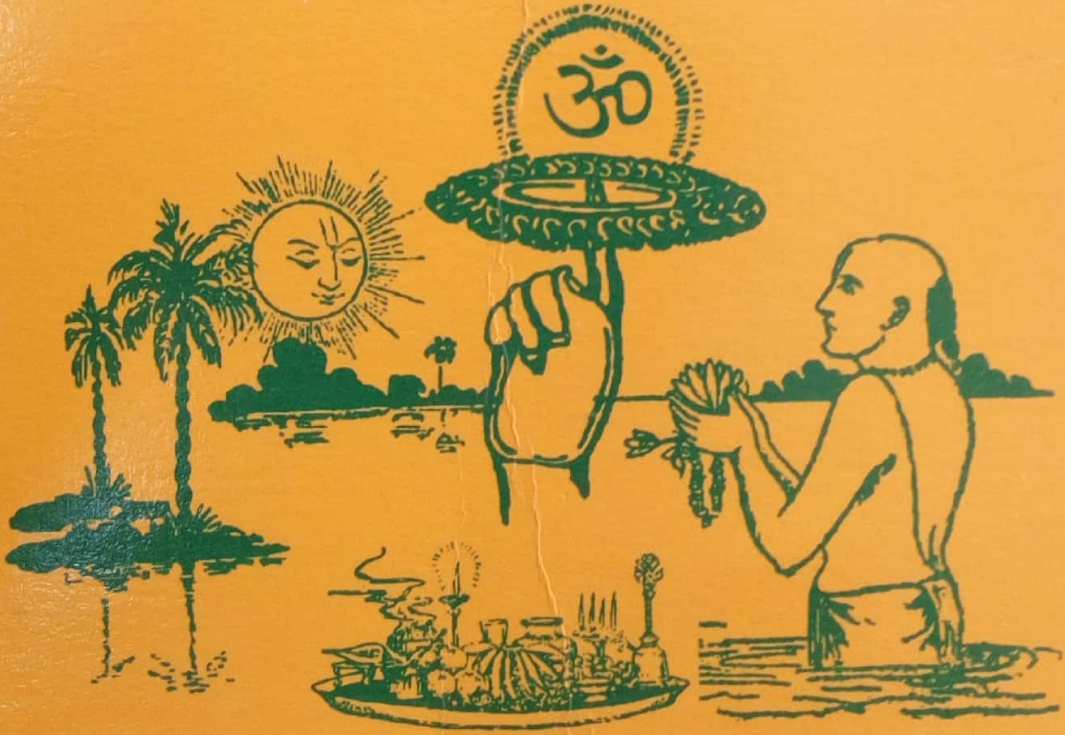
सम्पादक

स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज 'अच्युत'

प्रकाशक

स्वामी मोहनरामजी महाराज 'वैरागी'

रूपासर वास (ताऊसर) रामद्वारा, नागौर-३४१००१

श्रीहरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः

श्री

पूसाराम भजन विलास

जिसमें

श्री श्री १०८ श्री स्वामी ईसररामजी महाराज कृत

श्री स्वामी पूसारामजी महाराज कृत

भजन / छन्द उपदेश है

सम्पादक एवं परिवर्द्धक

श्री वैष्णव रामानन्द सम्प्रदाय अग्रद्वारस्थ संतदासोत गूदड़गद्दी जोधपुर पीठाधीश्वर अनन्त श्री स्वामी सुखरामजी महाराज कृत सुखराम दर्पण के यशस्वी टीकाकारक श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज के परमशिष्य

तत्वज्ञ स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्यजी महाराज 'अच्युत'

(अनेक सन्तवाणी ग्रन्थों के रचयिता एवं सम्पादक)

श्री महन्त, उत्तम आश्रम, कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर-६

प्रकाशक	**स्वामी मोहनरामजी महाराज "वैरागी"** **महन्त- सिद्ध हनुमान मंदिर** **पूसारामजी का आश्रम** रूपासर बास (ताऊसर) नागौर-३४१००१
प्रतिवाद	पुनर्प्रकाशनादि सर्वाधिकार सम्पादक/प्रकाशक द्वारा स्वरक्षित्
प्रसारण	सतगुरु स्मृति में परमोत्सव के उपलक्ष्य में भक्तों के सहयोग से प्रसारित
प्रथमावृति	वि.सं. २०५९ शकाब्द १९२५ सन् २००२ ई.
मूल्य	३५/-
अक्षर चित्रण	महेश वैष्णव *'रामावत'* **भास्कर क्रियेशन्स,** 14/178, चौ.हा.बो., जोधपुर, फोन : 627939
पुस्तक प्राप्ति स्थान	१. उत्तम आश्रम, कागा मार्ग, जोधपुर-३४२००६ 2. पूसारामजी का रामद्वारा, रूपासरबास-३४२००१ ३. अपने शहर के प्रसिद्ध बुकसेलर से खरीदें
मुद्रक	विष्णु ऑफसेट प्रिण्टर्स, पाटोदी हाऊस, दरियागंज, दिल्ली-2

सम्पादक की श्यामानन लेखनी से..................................

एक व्यक्तित्व केधनी श्री स्वामी ईसररामजी महाराज

विश्व में महापुरुषों का अवतरण होना सर्वथा मंगलकाय रहा है। परमप्रभु की नित्य एवं नैमितिक शक्तियों का समयानुकूल प्रदर्शन होना प्राकृतिक कार्य है। लीला धाम का लीलावतरण लोकहित कारक होता है। समयानुरूप वाणी और पाणी के द्वारा लावण्य लीला को करना भक्तों के लिये कल्याण प्रेरक जीवन सार्थकता का परम द्योतक है। इसी शृंखला में नित्यावतार सन्त परम्परा के श्री वैष्णव वैभव में **आद्य** जगद्गुरु अनन्त **श्री स्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराज** को भारतीय इतिहास में कौन नहीं जानता कि जिनके द्वारा आततायी साम्राज्य के जजिया कर की समाप्ति के साथ हिन्दु धर्मोद्धारक का नव सूर्योदय हुआ था। भारतीय जन-जागरण में सर्गुण-निर्गुण उपासना की अविरल धाराओं का प्रवहन हुआ। जिनके द्वारा विभिन्न द्वाराचार्यों की अनेक शाखोपशाखाओं से निसृत अनन्त परम्पराएं सनातन धर्म को दीप्त कर रही है। आध्यात्मिक आकाश में चन्द्र सूर्य के अतिरिक्त अनन्त ब्रह्माण्डों की शोभा आलोकित है। जिन में चमकते हुए ब्रह्मण्डीय नक्षत्रों की शोभा भी निराली है। ऐसे ही धरातल पर अनन्त ऋषि-मुनि सन्त-जन अपने त्याग-वैराग्य तप-साधना से उदित अपनी अनुभव-वाणी से त्रिय ताप संतप्त संसार को शान्ति प्रदान करते आये है।

मारवाड़ मूण्डवा निवासी सूत्रकार क्षत्रीय (मेघ) श्री बरजांगराम कटारिया के घर में श्रीमती शान्ति देवी के कौंक्ष से वि.सं. १९०९ में एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ, जो श्री स्वामी ईसररामजी महाराज* के

टिप्पणी : * वस्तुतः शोध के अनुसार गांव अठियासन निवासी बरजंगरामजी और सोमारामजी दो सगे भाई थे। श्री बरजंगरामजी के इकलोती संतान श्री ईसररामजी महाराज और श्री सोमारामजी के नेनारामजी हुए, जो अभी वर्तमान में है।

नाम से प्रसिद्ध हुए। वि.सं. १९४० में वैष्णव रामानन्द सम्प्रदाय अग्रद्वार सन्तदासोत गूदड़गद्दी आचार्य पीठ जोधपुर के तृतीय पीठाधीश्वर श्री श्री १०८ स्वामी सुखरामजी महाराज से नाम दान भेष दीक्षा लेकर आप बाल ब्रह्मचारी विरक्त स्वभाव के कर्ण प्रिय वक्ता हुए। आप वाणी पुरुष तपोनिष्ठ प्रभावशील महात्मा हुए। वि.सं. १९७४ वैशाख पूर्णिमा को पैंसठ वर्ष की आयु में ही ब्रह्मलीन साकेत वासी हुए। आपके कई भेषधारी शिष्य हुए।

1. **श्री स्वामी पूसारामजी महाराज (सूरदास)** : गांव माँजरा (नागौर) के क्षत्रीय मेघ परिवार में वि.सं. १९३४ में जन्में जो वि.सं. १९४१ में नामदान लेकर योगाभ्यासी साधना के महात्मा हुए और वि.सं. १९८९ ज्येष्ठ शुक्ल ५ को परमधाम वासी हुए।

2. **श्री स्वामी छोटूरामजी महाराज** : गांव बलाया (नागौर) निवासी क्षत्रीय मेघवंशी विरदाराम कड़ेला के घर वि.सं. १९४० वैशाख वदि ७ बुधवार को जन्मे और वि.सं. १९६८ में श्री सतगुरु शरण लेकर वि.सं. २०२१ चैत्रवदि ११ को साकेतवासी हो गये।

३. **श्री स्वामी पूसारामजी महाराज** : वि.सं. १९३९ भाद्रपद सुदी १० गुरुवार को गांव नाड़सर तहसील भोपालगढ़ जिला जोधपुर निवासी श्री सूत्रकार क्षत्रीय जेसारामजी कटारिया गृहे धर्मपत्नी श्रीमती सुगनीदेवी के कौंख से एक बालक का जन्म हुआ। वही आगे भावी जीवन में संत पूसारामजी के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप बाल्यावस्था से ही हरि भक्ति, जनसेवा, सत्संग में जाना आना रखते थे। सन्तों से प्रेम रखते हुए, माता-पिता ने सांसारिक मोह माया में फंसाने के भरसक प्रयास किये। किन्तु प्रारंभ से ही निवृतभाव के कारण आप साधना में लगे रहे और घर के कामकाज भी निर्वाह रूप करते रहे। वि.सं. १९६४ (सन् १९०७) में मारवाड़ मूण्डवा के प्रसिद्ध श्री स्वामी ईसररामजी महाराज की शरणागत हुए और नामदान भेष दीक्षा प्राप्त करके महाविरक्त हनुमान साधन सिद्ध महापुरुष प्रसिद्ध हुए। आप विरक्त भाव से गांव रोल (नागौर) में हनुमान मंदिर बना

कर रहने लगे, किन्तु वहां सर्वथा जल के अभाव में किसी व्यक्ति द्वारा जल केबर्ताव में कद्रू-कंजूसी के कटू शब्द बाण उच्चारण किये, तब से ही उस मन्दिर को छोड़कर एकान्तवास बस्ती से दूर नागौर शहर के पास गांव रूपासर बास ताऊसर में 'सिद्ध हुनमान मंदिर' बनाकर लोकहित, चिन्तन, परोपकार, तत्व उपासना में जन जागृति करने लगे। वह रोल मन्दिर अभी जनता के हाथ मे है।

आप शिक्षा प्रचार में बल देते, बाल विवाह, दुर्व्यशन, नशे-पते, शराब-मांस, मृत्युभोज, बहुविवाह के विरुद्ध, अश्पृस्यता निवारण, हरिभक्ति के प्रचार से अपना सामाजिक क्षेत्र प्रतिष्ठा पूर्ण स्थापन किया। आप हनुमान उपासना में सिद्धावस्था को प्राप्त हो गये थे, इससे कोई भी रोगी मानव अपने दुःख को पुकारता, उसे कुछ देशी चुटकलें, औषधि चमत्कार अथवा हवन की खाक देते, वह मानव प्रयोग करते ही स्वस्थ सुखी हो जाता। आप अच्छे मृदुभाषी, एकान्तप्रेमी, शीलव्रत के पक्के विरक्त सन्त होने से आसपास की जनता का रोज दर्शनार्थ तांता लगा रहता था। आज भी उनके नाम से लोग लाभ उठाते है। आप वि.सं. २००९ आषाढ़ सुदी २ मंगल (ता. २४ जून १९५२) को परम धाम पधारे, उस समय भी लोगों की आशा इतनी उमड़ पड़ी की दाह संस्कार की भस्मी एक एक चुटकी भर ले जाते पूरी साफ हो गई। वहीं पर आपके नाम से आश्रम और आपका स्मृति स्थल (समाधि) धाम बना हुआ है। लोग दर्शनार्थ आते और लाभ उठाते है। आपकी वार्षिक निर्वाण तिथि पर मेला/सतसंग का आयोजन रहता है। अभी आपके उत्तराधिकारी परम्परा में शिष्य **सन्त मोहनराम** की व्यवस्था में आश्रम व्यवस्थित सुचारू प्रगतिशील है। उन्हीं की प्रस्तुत अनुभव वाणी श्री सतगुँ देव के साथ प्रकाशित की जा रही है।

सन्त मोहनरामजी वि.सं. २००८ आश्विन सुदी नवमी मंगलवार (ता. ९ अक्टूबर १९५१) को गांव मतोड़ा (मथाणिया) निवासी सूत्रकार मेघवंशी श्री ईसरराम पंवार गृह धर्मपत्नी श्रीमती केंकू देवी के कौंख से एक दैदीप्यमान बालक का जन्म हुआ, जो आगे संत

मोहनराम जी के नाम से जाने गये। बाल अवस्था से सत्संग प्रेम, सन्तों की भावुक प्रवृति, सत्य धर्म निष्ठा के जीवन से घर के काम में लगे रहते। घर-व्यवहार में रहकर भी आप निवृत्ति मार्ग का समर्थन करते, अचानक घर छोड़कर वि.सं. २०३२ (सन् १९६५) में तीर्थाटन करने निकल गये। अनेक प्रान्तों में तीर्थ भ्रमण, सन्त आश्रमों में रहकर सन्त सेवा करते, घूमते हुए गांव जूंझाला धाम (नागौर) में पहुंचे, वहां श्री छोटूरामजी महाराज के शिष्य श्री स्वामी पूरणाराम (पूनाराम) जी से सान्निध्यवास हुआ। उन्होंने नाम-भेष दीक्षा देकर के श्री १०८ श्री स्वामी ईसररामजी महाराज (मूंडवा) के परमशिष्य श्री स्वामी पूसाराम जी महाराज का आश्रम सिद्ध हनुमान मंदिर रूपासर बास ताऊसर (नागौर) की उत्तराधिकार सेवा में भेज दिये और वहां की चलाचल सम्पत्ति का स्वामत्वि लिखित करके सौंप दिया। तभी से आप गुरुदेव की आज्ञानुसार अड़तीस वर्ष का सूना पड़ा कच्चा ध्वस्त रूप में मंदिर जहां दीवारें टूटने लगी थी, प्रांगण में घास फूस कचरे का ढेर था। आपने वहां आकर अपने पुरुषार्थ जनजागरण से सहयोग सेवा करके श्री स्वामी पूसारामजी महाराज की स्मृति स्थल समाधि पर छतरी, चारदीवारी तथा टूटे फूटे मन्दिर आश्रम का जीर्णोद्धार तथा कई नव निर्माण कमरे, सत्संग भवन, सामुदायिक भवन, जल, बिजली एवं सार्वजनिक जलहौद इत्यादि के कई पारमार्थिक कार्य करवाये।

वि.सं. २०५२ आषाढ़ सुदी २ शुक्रवार दिनांक ३० जून, १९९५ को वार्षिकोत्सव (परम गुरुदेव की बरसी) पर गुदड़भेष आचार्यपीठ जोधपुर के श्री स्वामी हरिरामजी महाराज वैरागी की परम्परानुगत मूल गद्याचार्य स्वामी सुखरामजी महाराज 'वैरागी' के गद्दीपीठ परम्परानुगत उत्तराधिकारी स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज द्वारा आप को चद्दर ओढ़ाकर महन्त पद से प्रमाणित किया। तब से अद्यावधि प्रतिवर्ष बरसी तथा आश्रम की श्री वृद्धि एवं जन जागरण समाज सेवा करते रहते हैं। आप मृत्युभोज, बाल विवाह, अश्पृस्यता, अशिक्षा के

विरुद्ध, नशा दुर्व्यशन त्याग करवाने में लग रहे हैं। वि.सं. २०५७ आषाढ सुदि २ सोम वार दिनांक ३ जुलाई २००० ई. के वार्षिकोत्सव पावन अवसर पर स्वामी रामप्रकाशाचार्य की प्रेरणा माध्यम से सन्तदासोत गूदड़गद्दी सन्तधाम दान्तड़ा मुख्यालय के पीठाधीश्वर श्री श्री १०८ स्वामी निर्मलरामजी महाराज की आमन्त्रित पधरवाणी करवाई और अभी आप के द्वारा श्री परमगुरु पूसारामजी की वाणी का प्रस्तुत प्रकाशन किया जा रहा है।

प्रस्तुत वाणी दिवंगत महापुरुष के हृदयोद्‌गार निसृत वचनामृत है जो माधुर्य से पूरित उद्देश्य परीक्षा एवं लक्षण की ग्रन्थियोग से ग्रन्थित किये सरल और सुन्दर है। जो समय समय पर अपनी मौज से उच्चारण करते थे और कतिपय भक्तों को कण्ठस्थ होते या भक्तशिष्यों द्वारा जीर्ण शीर्ण पत्रों में उत्कृति किये हुए होते, वहीं भक्तों का सर्वस्व धन कल्याण मार्ग होता है।

प्रस्तुत वाणी का वि.सं. २०२६ (१९६९ ई.) को हमारे द्वारा सम्पादित संस्करण मुख्य शाखा द्वारा प्रकाशन हुआ था, जो पाठी जनों के साथ जन साधारण द्वारा आध्यात्मिक जगत में अपनाया था। निरन्तर मांग बढ़ने पर भी कोई पूर्ति नहीं कर पाया। सम्पादकीय प्रेरणा से संत मोहनराम 'वैरागी' महन्त पूसारामजी का आश्रम रूपासर बास (ताऊसर) द्वारा प्रस्तुत प्रकाशन हो रहा है। आशा है आत्म चिन्तन क्षेत्र के मुमुक्षूजनों के लिये अति उपयोगी होगा।

प्रकाशन में रही कर्णापाटव अशुद्धियों के लिये सदा देववृति से सुधार कर पढ़ने के साथ रही कमीपूर्ति हेतु प्रेरित करेंगे।

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)
कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर
गंगादशमी,
२०४९ वि.

साहित्यान्वेषक
स्वामी रामप्रकाशाचार्य 'अच्युत'
श्री महन्त
गूदड़गद्दी, जोधपुर

राम

सर्वस्वसमर्पण

जिन का परम तपोमय जीवन लोकोपचार में व्यतीत हुआ,
वे युगपुरुष ज्ञान-द्रष्टा सिद्ध स्वरूप
श्री वैष्णव रामानन्द सम्प्रदाय के सन्तदासोत गूदड़गद्दी
के परम पायक परम पूज्य पाद

श्री श्री १०८ श्री स्वामी ईसररामजी महाराज के

परमशिष्य परम वीतरागी
श्री स्वामी पूसारामजी महाराज "वैरागी"
जिन की स्मृति लोक हृदय में चिरकाल
बाद भी सजीव है।
आप की अन्तस्थ प्रेरणा से आप की अमृत वाणी
आपके ही सर्वस्व समर्पित है।

तेरा तुझ को अर्पण, मेरा तो कुछ नाहि।
जो मैं हूं सो आप का, अन्तर दूजा काहि॥

पूसाराम आश्रम
रूपासर बास (ताऊसर)
नागौर

समर्पण
संत मोहनराम वैरागी
ज्येष्ठ पूर्णिमा, २०५८ वि.

प्रकाशक की गुरु पीढ़ी दर्शन

अनन्त श्री वैष्णव धर्मावतार पराम्परा ब्रह्म स्वरूप आध जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्यजी महाराज की परम्परा में सर्वश्री स्वामी अग्रदासजी महाराज की शिष्य पीढ़ी से दॉन्तड़ा में प्रसिद्ध परिवाराचार्य स्वामी सन्तदासजी का अवतरण हुआ। जिन की क्रमशः गुरु-शिष्य पीढ़ी इस प्रकार अवतरित विस्तृत होती रही।

१. श्री स्वामी सन्तदासजी महाराज (दाँन्तड़ा धाम)

↓

२. श्री स्वामी कृपारामजी महाराज (दाँन्तड़ा धाम)

↓

3. श्री स्वामी केवलरामजी महाराज (दाँन्तड़ा धाम)

↓

४. श्री स्वामी रामचतुरदासजी महाराज (दाँन्तड़ा धाम)

↓

५. श्री स्वामी दौलतरामजी महाराज (दाँन्तड़ा धाम)

↓

६. श्री स्वामी गंगारामजी महाराज (रामधाम कोटा)

↓

७. श्री स्वामी हरिरामजी (जोधपुर, आचार्य पीठ, संस्थापक)

↓

८. श्री स्वामी जीयारामजी महाराज (जोधपुर)

↓ →

९. श्री स्वामी सुखरामजी महाराज

↓

१०. श्री स्वामी अचलरामजी वैरागी, जोधपुर

१०. श्री स्वामी सेवारामजी

१०. श्री ईसररामजी महाराज (मूँण्डवा)

११. श्री स्वामी उत्तमरामजी

११. श्री स्वामी हीराबाईजी

११. श्री पूसारामजी (रूपासर बास) ताऊसर

११. श्री छोटूरामजी (मूंडवा)

११. श्री पूसारामजी (सूरदास)

१२. श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) जोधपुर वर्तमान

१२. श्री स्वामी रामजीवणजी हीरा आश्रम, बसीबास, नागौर वर्तमान

१२. श्री पूनारामजी

१२. श्री खाजुरामजी ईशरराम आश्रम मूण्डवा

१३. महन्त श्री मोहनराम

↓

विद्यार्थी बनाराम
सिद्ध हनुमान मन्दिर, पूसाराम आश्रम
रूपासर बास, ताऊसर
नागौर

सम्पादकीय

श्री पूसाराम भजन विलास की अनुक्रमणिका

श्री स्वामी ईसररामजी कृत भजनों का

सूची पत्र

क्रमांक	विषय अनुक्रमणिका	पृष्ठांक
१९	परम गुरु दाता बंगलो अजब	११
२०	बंगला चौदह लोक पर देख	११
२१	हरिजन से हीरा पावे रे	१२
२२	हरि बिन और लगे नहीं कारी	१२
२३	साधो भाई ! भजन कियां हरि नेरा रे	१३
२४	साधो भाई ! इस विध ब्याह रचायो	१४
२५	समझ्यो रे ! मन तोता	१५
२६	सुण मैना प्यारी बोलो	१५
२७	निज मन समझ्योरी ततविचार	१५
२८	जग स्वप्ना में रम जास्यां	१६
२९	सतगुण ले निर्भय होय जास्यां	१७
३०	मन मस्त फकीरा मगन भया मनमाता	१७
३१	इश्क के मारग है बंके	१८
३२	इश्क का यह रास्ता भाई	१८
३३	भाई सुण लेणा जो पूगा उण देश	१९
३४	मदवा घूमत ज्यों हाथी	२०
३५	प्यारी ए ! संगत सार विचार	२१
३६	प्यारी ए ! जाग्रत विश्वे जीव	२१
३७	साँग फकीरी भेद न भावे	२२
३८	अण समझ्याँ को लखत नहीं आवे	२३
३९	आतमराम सकल् प्रकाशी	२३
४०	लख गूँगे ज्यूँ आ सैन है	२४
४१	साधो भाई ! अगम पन्थ दुहेला	२४

श्री स्वामी पूसारामजी कृत जनों की विषय सूची

क्रमांक	विषय अनुक्रमणिका	पृष्ठांक
२	करस्यां गुरुजी को सागो रे	७०
३	गुरु सरीखा देव म्हारे मन भावे	७०
४	सिरजण हार भज्याँ बिन	७१
५	जगत जाल को छोड़ परेरा	७२
६	आंवे अवलेका गुरुदेव का	७२
७	मान मती कर अभिमान	७३
८	एसा निज ध्यानी साधो	७४
९	फकीरी ! विरला उतरे पार	७४
१०	शीत लगे नहीं वाणी ए लोय	७५
११	प्यारी ए! बाँझ नार के पास	७६
१२	प्यारी ए! ले विवेक वैराग	७६
१३	साधो भाई ! सेवा चार बताई	७७
१४	गुरुजी ! कहां तक करूँ बखाना	७८
१५	साधो भाई ! हंसा करत विलासा	७८
१६	साधो भाई ! अविद्या भ्रम बंधाया	७९
१७	साधो भाई ! केवल ब्रह्म विचारा	७९
१८	साधो भाई ! चेतन सब का जाणी	८०
१९	साधो भाई ! आविधि विरला जोई	८०
२०	साधो भाई ! चेतन शक्ति समाया	८१
२१	साधो भाई ! अविगत भेद हमारा	८१
२२	साधो भाई ! बेगम देश घर मेरा	८२
२३	आरती करूं गुरुदेव तुम्हारी	८२
२४	गऊ को दान समझो बडभारी	८३
२५	कुब्जा पर कृपा करी गिरधारी	८३
२६	गुरूजी ! अचरज खेल रचाया	८४
	१. मिश्रित कुण्डलिया, कवित आदि ३६ छन्द	८५ से ९६

श्री पूसाराम भजन विलास प्रकाशन में सहयोगी दानवीर
श्री तुलसीराम पिताश्री नेतारामजी पालड़िया
मूण्ड़वा रोड़, गॉव–खैंण वाया नागौर–341001
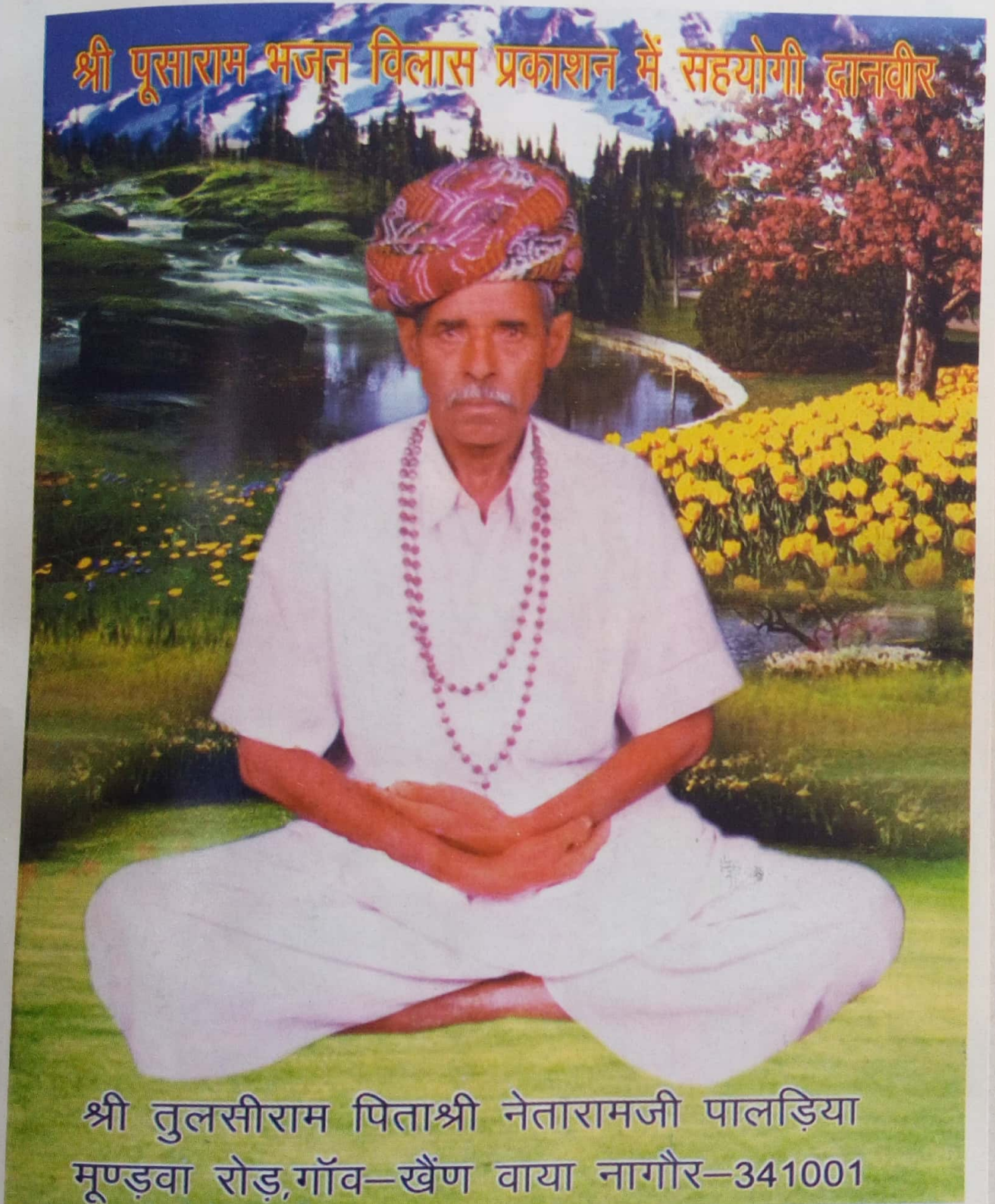
श्री स्वामी ईसररामजी महाराज
पूसाराम आश्रम, रूपासर बास
ताऊसर, नागौर
श्रीस्वामी पूसारामजी महाराज
श्रीस्वामी पूसारामजी(प्रज्ञाचक्षु)
शिष्य बनाराम वैष्णव
श्री स्वामी मोहनरामजी महाराज
महन्त –पूसाराम आश्रम

श्री हरिगुरु सच्चिदानन्दाय नमः

श्री

पूसाराम भजन विलास

श्री श्री १०८ श्री स्वामी ईसररामजी महाराज कृत अनुभव वाणी

भजन (१) राग हेली, सहेली, बधावा

बधावो अपना सतगुरु, परम गुरु आया द्वार ॥ टेर॥

कुम्भ कलश सतगुरु की कृपा, सिर पर लिया उठाय।
ज्ञान ध्यान का ढोल बजत है, सईयां मिल मंगल गाय ॥१॥

निज मन की थाली करूँ, केसर प्रेम लगाय।
सुरत निरत मिल करत आरती, चेतन तिलक बणाय ॥२॥

हीरा पाया हरि नाम का, जग मग जोत जगाय।
दर्शन की बलिहारियाँ, सन्मुख लिया बधाय ॥३॥

हरि संत सतगुरु भल आया, सजनी सेज बिछाय।
आज उमावो लागियो, हो रह्या आनन्द उछाय ॥४॥

धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, घट में भया उजास।
"ईसरराम" यूँ करत वीनती, गुरु चरणों में मेरा वास ॥५॥

भजन (२) राग सहेली, हेली

सेव नित करो भलि मारी हेली, सतगुरु समर्थ देव ।।टेर।।
सतगुरु श्याम मुक्ति का दाता, कसर न राखे काय।
कर कृपा भवसिंधु से तारे, डूबत लेत बचाय ।।१।।
सतगुरु मेरा ब्रह्म प्रकाशी, उदय भया ज्यूँ भाण।
भिन्न भिन्न कहै ज्ञान की बातों, देत समझ बहु जाण ।।२।।
सेन बताय किया गुरु चेतन, निर्गुण नाम लखाय।
अमर लोक से हरिरस लाया, प्रेम प्याला पाय ।।३।।
गुरु "सुखराम" देव है सांचा, किया कर्म का नास।
"ईसरराम" रहो शरणागत, सुमरो सास उसास।।४।।

भजन (३) राग दादरा ताल-3

सतगुरु श्याम देवन का देवा ।।टेर।।
पूर्व जन्म से हम गुरु गम पाई।
सुमिरण ध्यान करूं नित सेवा ।।१।।
भरम कूप से सतगुरु काढ्यो,
बांह पकड़ ने आप माहि लेवा ।।२।।
निर्धन को धन भयो प्राप्त,
भूखों को भोजन मिल गया मेवा ।।३।।
रैन दिवस मैं कबहुँ ना भूलूँ,
मच्छली की प्रीत नीर से नेहवा ।।४।।
धन "सुखराम" मेरे पर उपकारी,
"ईसरराम" गुरु चरणों में रेहवा ।।५।।

भजन (४) राग आसावरी पद

साधोभाई ! सतसंग सदा सुहागी।
कर सतसंग कुसंग नहीं बिगड़्या, सो जन है बड़भागी ।।टेर।।
राम महोले बैठा सुरत कर, चोट शब्द की लागी।
मिट गई खोट निकल गया धूँआ,कलह कल्पना भागी ।।१।।
पलट्या जीव पीव से मेला, या विधि गुरु गम जागी।
जनम मरण बहुरि नहीं आवे, जोत में जोत मिलागी ।।२।।
संगत स्वरूप आप हरि का, अगम निगम सत भाखी।
संगत सार आर अरु पारा, लख चेतन थिर राखी ।।३।।
सत की संगत का राह बताया, "सुखराम" गुरु पागी।
"ईसरराम" संगत में समरथ, अरस परस वैरागी ।।४।।

भजन (५) राग आसावरी पद

गुरुजी रा चरण परस पद पाया।
मिट गई भूल समझ आई सोजी, संत उलट आद घर थाया ।।टेर।।
जग सावण में फूल्या फिरता, गूँगल गोली चलाया।
बाग भृँगी सतगुरु मिलिया, शुद्ध सोहं पुष्प सुंघाया ।।१।।
भरम्यां जीव जगत भेड संग, ज्युं केहरि रूप भुलाया।
सिंह सतगुरु उपदेश बताया, सत आप रूप औलखाया ।।२।।
भ्रम कूप का नीर छुड़ाया, गुरु सुख सागर झुलाया।
परेवा पलट हंस कर लीना, निज मोती नाम चुगाया ।।३।।
पारस से पारस नहीं होता, लोह कंचन पलटाया।
सतगुरु करले आप समाना, ज्यूँ अग्नि काष्ठ जलाया ।।४।।

गुरु का चरण शब्द गह खोज्या, शब्द-वचन समझाया।
समझ रमझ शान्ति सुख लीना, शिष्य महा परम सुख पाया ॥५॥

धन "सुखराम" मिल्या गुरु साचा, चेतन ब्रह्म लखाया।
'ईसरराम' सोहं सत जाण्या, अविचल अक्षय अजाया ॥६॥

भजन (६) राग मंगल पद

धन गुरु की बलिहारियाँ, दरशन कीयां परवाण ।टेर॥
गुरु चरण लपटि रहूँ, भोली रही अजाण।
बिन गुरु मुख भटकत फिरी, सतगुरु दिवी पिछाण ॥१॥
सुरत सुहागण सुन्दरी, सतगुरु सामे जोय।
हीरा पड़्या माणक चौक में, कण कण लीजे पोय ॥२॥
राम मोहेलो राम रो, हरिजन बैठा जोड़।
सतगुरु के प्रताप से, तरिया अनन्त करोड़ ॥३॥
"सुखराम" गुरु भेटिया, होरह्या आनन्द उछाव।
'ईसरराम' कहे सहेलियाँ, परसो गुरुजी रा पाँव ॥४॥

भजन (७) राग आशावरी पद

साधो भाई! सतगुरू तार लियोरी।
सतगुरू मुझमें, मैं सतगुरू में, ज्यों जल विच तरंग थयोरी ।टेर॥
जाड़ा भाग पूर्वला संचित, समर्थ हाथ धरयोरी।
ऐसा हीर धणी बिन सूना, जवहरि लूट रह्योरी ॥१॥
भूल भूल में केता कण खोया, अब के जाग रह्योरी।
उडि मोरी नींद स्वप्न में चेत्यो, गुरु गम सैल भयोरी ॥२॥

अकल अरूपी ब्रह्म अखण्डी, खोजत आनन्द भयोरी।
कट्या कर्म भ्रम सब भागा, भवसिंधु पार कियोरी ॥३॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, म्हाने केवल ज्ञान दियोरी।
"ईसरराम" खेल ख्याली का, बेरंग निरख रह्योरी ॥४॥

भजन (८) राग हेली, सहेली पद

हेलीए! सतगुरु दीन दयाल है, मुक्ति का सागरी।
हो जावो लीन आधीन, भजन बांधो गांठरी ।टेर॥
चितकर लेणा नाम, कीमत से चालणा।
सोहं सुमरण होत, विषय रस पालणा ॥१॥
मती लगावो वार, आदु पकड़ो बाटड़ी।
यह दिन ऐला जाय, भूलो मत एक घड़ी ॥२॥
पांच पचीसों मार, हटावो त्रिगुण धाड़ने।
शब्दां शस्त्र बाँध, जीतो यम राड़ ने ॥३॥
कलह कल्पना नाहि, सुख की वाटड़ी।
मिल्या सुखसागर के माहि, मेटी सब जातड़ी ॥४॥
भेट्या है मोतिन व्यापार, बाजी मारे खूब बणी।
पायो संत अजब मुकाम, मिल्या निज श्याम धणी ॥५॥
सतगुरु भेट्या "सुखराम", पलटायो गुरां जीवने।
कहता "ईसरराम" लखायो दाता पीवने ॥६॥

भजन (९) राग हेली, सहेली पद

हेलीए ! हरदम स्वास उसास, हरिगुण गाविये।
पल पल प्रीत लगाय, प्रेम रस पाविये ।टेर॥
दशो दोष कर दूर, मन इन्द्रियां जीतिये।
जत मत त्याग वैराग, गाढ़ा कर लीजिये ॥१॥
मिट गया तीनों ताप, कर्म सब काटिये।
उपज्यो आत्म ज्ञान, भ्रम सब नाटिये ॥२॥
त्वंपद ततपद जोय, असिपद आविये।
तुरिया से चित लाय, परम पद पाविये ॥३॥
गुरु मिलिया "सुखराम", शब्द सत ध्याविये।
कहता "ईसरराम" बहुरि नहिं आविये ॥४॥

भजन (१०) राग हेली, सहेली पद

हेलीए! तेरा पिया अमर अनूप है, अखण्ड धुन ध्यान धरी।
शम दम सोहँ विचार, दमोदम जान करी ।टेर॥
कर्म जाल जंजाल, कीच में आन परी।
जहँ जनम जनम बहुरोग, जगत सब विष से भरी ॥१॥
संगत सार विचार के, संतन की भेट खरी।
वहां ब्रह्म उजाला होय, कर्म की खोल करी ॥२॥
पग बिन पैंडा होय, नैन बिना निरख हरी।
केवल अगम स्थान, जब है ब्रह्मपुरी ॥३॥

अक्षय देश की सैल, सुहागण खूब करी।
सन्मुख मिली आप से, आप अणेसे नाहि भरी ॥४॥
सतगुरु भेट्या "सुखराम", देश की मोहि गम परी।
सो सत कहता "ईसरराम" नितोनित आप हरी ॥५॥

भजन (११) राग सहेली, हेली पद

हेलीए! रामयो प्रीतम जोड़रो पायो, अजर अमर भरतार ।टेर॥
मैं जानूं प्रीतम को राखूं, प्रीतम लेगया मोय।
पीवत प्याला बैठ सुहागण, रही सैज में सोय ॥१॥
प्रीतम मुख से बोलिया, तुम सुनो सुहागण नार।
मन की शरम मेट मुख बोलो, कर्म भ्रम दो डार ॥२॥
ओत प्रोत मिली सेज में, भई सिंह की गाय।
साचा पिया से ताली लागी, और न आवे दाय ॥३॥
पीहर पधारी सुन्दरी, सूरत पिया के माय।
माय बाप से बातां लागी, मन खुल बोले नाय ॥४॥
सहेलियां में खुल कर बोले, करे पीया की बात।
मेरे पिया का क्या गुण वरणूँ, भेटत रही दिन रात ॥५॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पुरा, करदी चकनाचूर।
"ईसरराम" वो वर नहिं मरता, रहे सदा भरपूर ॥६॥

भजन (१२) राग हेली, सहेली पद

भजले निशदिन राम हजूर, भजियां से खुल जा अंकूर ।टेर॥

शब्द गुरु का निकलंक लागा, काट किया कर्म दूर ॥१॥
सांचा नाम हरि का कहिये, कर्म जाल जग डूर ॥२॥
तीरथ व्रत षट् सगुण सेवा, सिमरण पेण्डा करूर ॥३॥
ब्रह्म प्रकाशी सन्त सदा निवासी, ज्यारि घट बिच ऊगा सूर ॥४॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, "ईसर" भजो भरपूर ॥५॥

भजन (१३) राग हेली व सोरठ पद

नौबत बाजे छै जी दसवें द्वार, हरि भज उतरिया सो पार ।टेर॥
चतुर षट् दश द्वादश ऊपर, शोडष उभय हजार ॥१॥
नाभि कमल से शब्द उलट्या, हृदय से कण्ठ मंझार ॥२॥
त्रिकुटी छेद में ब्रह्म सु भेट्या, जग मग ज्योति अपार ॥३॥
झांझ मृदंग मुरली नाद बजत है, झालर शंख सितार ॥४॥
धन "सुखराम" मिला गुरु पूरा, दीवी शब्द की सार ॥५॥
"ईसरराम" अलमस्त फकीरा, लिया अगम घर धार ॥६॥

भजन (१४) राग हेली पद

निरख्यारी मारी हेली, आप में आप अरूप ।टेर॥
जगत-रीति स्वप्न ज्यूँ जाणी, निकस्या भ्रम का कूप ॥१॥
नैना नींद अन्न नहीं जरता, तन मन गया सब सूख ॥२॥
अरध उरध बिच पुरुष अपम्बर, नहीं छाया नहीं धूप ॥३॥
गैबी बोल परा निरदावे, अक्षय आप अनूप ॥४॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, "ईसर" सत स्वरूप ॥५॥

भजन (१५) राग हेली पद

हेलीए! चालो गुरां के देश में, चरण कमल चित धार ।।टेर।।
उलझ रही फंद रास में, लग्या कर्म का जार।
नाम बिना बन्ध्या नहि छूटे, राख भजन की सार ।।१।।
काया कागज की पूतली, छाँट लगे गल जाय।
पवन डोरा में पोयदी, दिन दोय नाच नचाय ।।२।।
अधर महल में खेलणो, अरध उरध के बीच।
पीया प्याला निज नाम का, कटिया कर्म का कीच ।।३।।
अमर बींद को चूड़लो, पहन्यो सुहागण नार।
सतगुरु की दासी बणी, करि भवसिन्धु से पार ।।४।।
"सुखराम" गुरु भेटिया, दीवी तोहि समझाय।
"ईसरराम" घट खोजियो, लिवी आप में थाय ।।५।।

भजन (१६) राग हेली पद

हेलीए! समझ्यां आगे रमझ है, समझ रमझ को जोय ।।टेर।।
कथणी बकणी सहज है, दुर्लभ बाणी की रहेत।
शुभ वाणी जो सन्त की, सो रहणी में बहेत।।१।।
जाग्रत से आगे चलो, स्वपनों नींद उडाय।
सुषोपति में सम थिर थई, तुरिया चित लगाय ।।२।।
तुरिया अभंग अरूप है, निरख परख ततसार।
आदि अंत मध्य एकता, खेलत आरम्पार ।।३।।

"सुखराम" गुरु जोगिया, रमण करे सब खण्ड।
"ईसरराम" गुरु गुँज से, निरख चढ्या ब्रह्मण्ड ॥४॥

— *भजन (१७) राग सोरठ, फकीरी पद*

फकीरी! लग्या न शब्द का तीर।
जिनके बाण लग्या गुरु गम का, वो मार लिया मन मीर ।।टेर॥
आठ पहर दुनियां को लूटे, सब सुख भोगे शरीर।
आठ पहर माया में यारी, बण बैठो पंच पीर ॥१॥
वस्त्र रंग्या पर मन स्यारि का, चुंट रह्या सब वीर।
इक घर त्याग बहुता घर पकड़्या, मन बुद्धि नाहि धीर ॥२॥
भीतर भरिया कर्म का कीटा, बाहर बण्या फकीर।
यह तो हाल फकीरी झूँठा, कहा करोगे जीर ॥३॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, योगी मस्त फकीर।
विघट खेल खेले संत शूरा, "ईसर" रहण सधीर ॥४॥

— *भजन (१८) राग सोरठ, फकीरी पद*

फकीरी ! जग में रहत निरास, तन मन पकड़िया सांच ।।टेर॥
काम क्रोध तज्या मोह फन्दा, ऊँच नीच कछु जात।
जो कहूँ तो कोई नहीं माने, आ तो जात अजात ॥१॥
देखा देख फकीर मत होजो, अन्त है अबड़ा घाट।
ऐतो ख्याल खेले जहं सोहे, निराकार की झाट ॥२॥
फक्कर मता सिंह ज्यूँ गाजे, भेड़ां जावे नास।
शूरवीर भारत में जूँझे, नहीं जीणे की आस ॥३॥

धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, अक्षय देश में वास।
मस्त दिवाना लगे नहीं बाना, कहता "ईसरदास" ॥४॥

भजन (१९) राग सोरठ, बंगला पद

परमगुरु दाता बङ्गलो अजब बणायो, तेरो पार कोई नहीं पायो ॥टेर॥
पांच तीन मिल नींव खिंचाई, अजब कारीगर आयो ॥१॥
आठ मास नव चिणतां लागा, नख शिख सान्ध जुड़ायो ॥२॥
कुदरत से मेरे दाता कली फिराई, पको ही रंग चढ़ायो ॥३॥
सात दीप नव खण्ड दश बारी, ना कोई धरयो ठहरायो ॥४॥
अधर तख्त पर मेरा स्वामी राजा बैठा, दीपक अखण्ड जगायो ॥५॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, आप में आप लखायो ॥६॥
"ईसरराम" राज बंगला में, निरखत रूप सवायो ॥७॥

भजन (२०) राग बंगला पद

बंगला चौदह लोक पर देख, जाके रंग रूप नहीं रेख ॥टेर॥
नहीं कोई पांच भूत का बंगला, नहीं कोई त्रिगुण धेक।
तुरियातीत कुदरती बंगला, तामे मीन न मेख ॥१॥
बंगला अधर अगम से आगा, निरमाया निरलेप।
कोटिक भानु प्रकाश उन्हीं का, घट घट ज्योति जगेक ॥२॥
अक्षय शुन बिच चेतन बंगला, अवरण अखण्ड अदेख।
समझ बुद्धि निश्चय लख पहुंचे, बिना नैणा से देख ॥३॥

अचरज खेल अलोकी बंगला, ता बंध मुक्त नहीं टेक।
ना कोई अगम निगम की बातां, ज्यूं गूंगा स्वप्न अनेक ॥४॥
गुरु "सुखराम" मिल्या सत बंगला, अविचल अमर अलेख।
"ईसरराम" अनादू बंगला, निज मुख रहिया पेख ॥५॥

भजन (२१) राग प्रभाती पद

हरिजन से हीरा पावेरे, भूल भूल गमावे रे॥टेर॥
कर्म कोट काठा जड्या, भ्रम भचीड़ा खायरे।
जन "ईसर" वह जीवड़ा, सहज नर्क में जायरे ॥१॥
जन "ईसर" उण जीवने, कनक कामणी घेर्‌यो रे।
भजन बिना भवसागर डूबा, लख चौरासी फेर्‌योरे ॥२॥
काम क्रोध व्यापे घणा, अभिमान अहंकार रे।
जन "ईसर" उण जीव का, बासा नरक द्वार रे ॥३॥
काम क्रोध व्यापे नहीं, सदा ज्ञान गलतान रे।
जन "ईसर" उण सन्त का, अखै शुन स्थान रे ॥४॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, भिन्न भिन्न कह समझावे रे।
"ईसरराम" चरण चित लागा, निशि दिन राम लडावे रे ॥५॥

भजन (२२) राग प्रभाती पद

हरि बिन और लगे नहीं कारी रे, हरि बिन और ॥टेर॥
राम नाम तूँ भूल्यो बन्दा, मनुष्य देह क्यों धारी रे।
अब की बाजी चूक जाय तो, फेर चौरासी त्यारीरे ॥१॥

ओ घर भूल कहां तुम जाओ, तोमें होवे भारी रे।
यमराज का सोटा बाजे, साहब देगा तुझे गारीरे ॥२॥
विष विषया तो मीठी लागे, हर चरचा तो खारीरे।
मन लोभी माया पर हुलसे, जैसे मूसा पर मंजारीरे ॥३॥
खाले पीले राम सुमरले, आ बिरियां है थारीरे।
काल पकड़ के यों ले जावे, ज्यों वन में सिंह छालीरे ॥४॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, करदी मुक्ति हमारीरे।
"ईसरराम" सुरत मेरी मैं, निशिदिन पिया से प्यारीरे ॥५॥

भजन (२३) राग प्रभाती, आशा पद

साधो भाई! भजन कियों हरि नेरा रे।
जो जन हुआ संत हेला मारिया, कीया कानड़ा बैरारे ।टेर॥
मनुष्य जनम आय नाम भूलियो, रह्यो ढ़ोर ज्यू ढ़ेरारे।
जनम जनम परला में जासी, थिर नहीं दीसे डेरारे ॥१॥
धन जोभन परिवार देख कर, क्या भूल्यो मुढ़ गेरारे।
भजन बिना चौरासी जासी, ज्यों गाड़ी में पेरारे ॥२॥
झूँठी मिथ्या मत कर बन्दा, काल देता है घेरा रे।
जीव पकड़ तोहि यम ले जासी, लागेला बहुत भचेरा रे ॥३॥
हम में आप आप में हम है, ज्यूं दर्पण में चेरा रे।
"ईसरराम" सत साहब भजिया, ज्यांका मिट गया फेरारे ॥४॥

भजन (२४) राग आसावरी पद

साधोभाई ! इस विधि ब्याह रचायो।
सप्त धातु के रंग महल में, भजन कियां घर पायो ।।टेर।।
पूरव लेख से हुई सगाई, शब्द नारेल झलायो।
प्रेम प्रीति की मेहंदी पीठी, तत को तेल चढ़ायो ।।१।।
सुरत निरत का बांध्या डोरड़ा, राम लूंकार ओढ़ायो।
समझ तलवार लिवी कर माहि, गुरु गम ढ़ोल बजायो ।।२।।
सभा चौक श्रवण की थाली, नाम रुपयो वर्षायो।
हृदय कागज में नामों मांड्यो, समझ्यां जहँ परखायो ।।३।।
धुन बैल काया को तांगो, अलख सागरी आयो।
जीव बींद स्मरण को जामो, हरदम बाट चलायो ।।४।।
ज्ञान मोड़ ध्यान को पडलो, स्वास उश्वास भरायो।
शुद्ध बुद्धि नारी आई समेले, चेतन तिलक चढ़ायो ।।५।।
सत का थम्भा मत का तोरण, रमझ चिड़कल्यां छायो।
क्षमा खाती काम करणी को, तोरण बींद बनायो ।।६।।
शील शन्तोष की चँवरी माडी, सुमता से हाथ जुड़ायो।
जाज्ञा ब्रह्म अकल की पाटी, बिन पग फेरो फिरायो ।।७।।
साहब नाम से डोरी लागी, लिवल्या बधाई लायो।
इड़ा पिङ्गला मंगल गावे, सुषमण दौड़ बधायो ।।८।।
चौरासी की करी फारगती, बनो परण घर आयो।
"ईसरराम" सतगुरु की कृपा, जाय चरण लपटायो ।।९।।

भजन (२५) राग पद

सभझ्योरे मन तोता, हरि को भजन गुण गायो ।।टेर।।
शम दम साज सूआ को पकड्यो, स्मरण पेच नकायो ।।१।।
इण सूआ के रूप न रेखा, पर बिन अधर उडायो ।।२।।
धर बिन बाग बाग बिन बाड़ी, अम्बर आम बैठायो ।।३।।
केरी सांच चौंच बिन तोड़ी, पावत आनन्द लखायो ।।४।।
शिखर गोखड़े निर्भय खेलो, जहाँ बिलो नहीं आयो ।।५।।
"ईसरराम" सतगुरु कृपा से, सुओ समझ सुख पायो ।।६।।

भजन (२६) राग पद

सुण मैना प्यारी, बोलो राम रस वाणी ।।टेर।।
अचेत बाग से पकड़ मंगाई, ब्रह्मदेश में आणी ।।१।।
विषय बाग में क्या सुख पाती, जन्म मरण दुःख हाणी ।।१।।
राम नाम का लड्डू चुगाऊँ, पीयो प्रेम रस पाणी ।।२।।
तन पीञ्जर में हरिगुण गावो, यही है अमर निशाणी ।।३।।
अमर वृक्ष पर कैल करो तुम, वहां नहीं मंजारि चढ़ाणी ।।५।।
गुरु "सुखराम" तोहि समझाई, "ईसरराम" सत जाणी ।।६।।

भजन (२७) राग पद

निज मन समझ्योरी तत विचार, अखै भजन में लग रही तार ।।टेर।।
पल पल अवधि जाय सब बीती, गुरु का वचन गृहे कर जीती।
साचा शब्द लग्या सतगुरु का, खुल गया अनुभव ज्ञान बजार ।।१।।

नि:अक्षर निर्बन्धन कहिये, पग बिन बाट बाट बिन बहिये।
सुरत निरत निगह कर चलना, यह पैण्डा खाण्डे की धार ॥२॥
अखे अनामी अखण्डा स्वामी, सोई चराचर अन्तर्यामी।
अकल अजूणी जूण नहीं आता, ऐसा अविगत अगम अपार ॥३॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, कर्म भ्रम भाग गया दूरा।
"ईसरराम" लख्या सत स्वामी, जन्म रु मरण नहीं आकार ॥४॥

— भजन (२८) राग पद लूहर-लोय

जग स्वप्ना में रम जास्यां,
मैं तो गुरु चरण चित लास्यां ए लोय ।टेर॥
हरदम हृदय चढ़ कर पेड़ी,
मैं तो निशिदिन राम लडास्यां ए लोय ॥१॥
काची काया रंग पतंगा,
मैं तो अजर अमर घर पास्यां ए लोय ॥२॥
अनहद बाजा राग छतीसों,
मैं तो कर बिन बीण बजास्यां ए लोय ॥३॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा,
मैं तो अखै देश बसास्यां ए लोय ॥४॥
"ईसरराम" भजन लिव लागी,
मैं तो सास उसास समास्यां ए लोय ॥५॥

— भजन (२९) राग लूहर, लोय पद

सतगुण ले निर्भय होय जास्यां,
म्हारी आवा गमन मिटास्यां ए लोय ।।टेर।।
गुरु सन्तन की संगत करस्यां,
मैं तो जुगत मुगत फल पास्यां ए लोय ।।१।।
गुरु कृपा कर शब्द सुनाया,
मैं तो श्रवण मनण करास्यां ए लोय ।।२।।
गुरु गम बारी खुली किंवारी,
मैं तो ब्रह्म आनन्द मिलास्यां ए लोय ।।३।।
त्रिकुटी छेद्या ब्रह्म सूं भेद्या,
मैं तो ज्योति में ज्योति रलास्यां ए लोय ।।४।।
''सुखराम'' स्वामी मेरा अन्तरयामी,
मैं तो चरण परस पद पास्यां ए लोय ।।५।।
निज हरि नामा सुख की धामा,
मैं तो ''ईसरराम'' गुण गास्यां ए लोय ।।६।।

भजन (३०) राग पद

मन मस्त फकीरा मगन भया मन माता,
निशि दिन राम लड़ाता ।।टेर।।
स्वर्ग नर्क राह है दोनों, हरफ लिख्या सो पाता।
सांच बह्या सो पार पहुँच्या, झूंठ गडींदा खाता ।।१।।

विषय विकार तजो मन मेरा, हाथ कछु नहीं आता।
यह सुख तो स्वप्ना की सेजां, जनम मरण दुःख पाता ॥२॥
सत का शब्द सोच कर पकड़ा, आठ पहर लिव लाता।
गुरु साहब संतन की सेवा, सुखसागर में न्हाता ॥३॥
ज्ञानी ध्यानी जती सती योगी, अगम निगम जस गाता।
पल पल देश कबहुँ ना भूलूँ, महा परम पद पाता ॥४॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, केवल ब्रह्म मिलाता।
"ईसरराम" भया अब निर्भय, बहुरि जनम नहीं आता ॥५॥

भजन (३१) राग रेखता पद

इश्क के मारग है बंके, दिये निज नाम के डंके ।टेर॥
दोड़ जग जात है भगे, इश्क बिना कोई नहीं लखे।
कपट को छोड़ दे अगे, मुर पीछे उड़ रहे फके ॥१॥
गुरु के चरण में लगे, तिनके भ्रम सब भगे।
उन्हीं के रति ना शंके, सोही जन जगत में जगे ॥२॥
वहाँ कोई जाय तो सके, आस नहीं तन की रखे।
ना कोई उघाड़ा ढके, असंगी देश है अखे ॥३॥
इश्क से अमृत को चखे, गुरु "सुखराम" मिले पक्के।
"ईसरराम" करत हक्के, मिटे यमदूत के धक्के ॥४॥

भजन (३२) राग रेखता पद

इश्क का यह रस्ता भाई, इश्क से ज्ञान गली पाई ।टेर॥

वचन की तोपां छुड़वाई, भ्रम के किले को ढ़ाई।
गमन कर अगम को जाई, समझ संत परमपद पाई ॥१॥
इश्क तो हक्कीकी न्यायी, हकीकी बिन प्रलय अन्यायी।
इश्क में मैं बिगड़्या जाई, मिटा सब ताप तिहुँ ताई ॥२॥
इश्क सों सुरता समझाई, पिया से खूब मिली जाई।
वहां तो धूप नहीं छाई, आपा से कह्या नहीं जाई ॥३॥
घर तो अगोचर थाई, उलट कर वाँही समाई।
कृपा सतगुरु की पाई, "ईसरराम" अब डर नहीं काई ॥४॥

भजन (३३) राग लङ्गड़ी लावणी पद

भाई सुण लेणा जो पूगा उण देश,
भया जो निशंका ॥टेर॥
जग में ब्रह्म सकल ब्रह्म माही,
बरतन अनंत बसे इक सांई।
कर्म जाल से दीसत नाहीं,
भर्या भ्रम का कूप, मिट्या नहीं शंका ॥१॥
शीश बिना जूँझे जन शूरा,
वह पद पावे हरिजन पूरा।
कायर जावे भाग अधूरा,
अन्त मरण की चोट, राह यह है बंका ॥२॥
गुरु गम गोला छूटण लागा,
काम क्रोध मोह बन्धन भागा।

भ्रम किल्ला को दौड़्या आगा,
मार काल की फौज, दिया सत डंका ॥३॥
ऐसा ख्याल खेल जन "ईसर",
हरदम राम पलक मत बीसर
यूँ भवसागर बाहिर नीसर,
गुरू मिल्या "सुखराम", मिट्या भव शंका ॥४॥

भजन (३४) राग लङ्गडी, लावणी पद

मदवा घूमत ज्यों हाथी।
अमर पट्टा सतगुरु लिख दीना, जागीरी साची ।टेर॥
गुरु गम आँच लगी मेरे मन में, जगी है विरह भाटी।
सुरत कलाली प्याला फेरे, पीवो सैण साथी ॥१॥
पीवत प्याला जेज लगी, उर भभक तार जागी।
सोहं तार लगी घट भीतर, सूरत मस्त माती ॥२॥
नशा किया तब बकने लागा, अनुभव की बाती।
कर मतवाल पड़्या भारत में, नहीं छोड़ी बाकी ॥३॥
उलटा राह बहै जन शूरा, चढ्या बंक घाटी।
निशि दिन गोला लगे नाम का, काल फौज नाटी ॥४॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, मतवाला भागी।
"ईसर" नशा कबहूँ नहीं उतरे, दिवस और राती ॥५॥

भजन (३५) राग मंगल पद अरिल्ल

प्यारी ए! संगत सार विचार, सन्तन की कीजिये।
सांचा हरिजन जोय, राम रस पीजिये ॥१॥
शुन में धुन लगाय, हरिगुण गाईये।
निशिदिन पीव लड़ाय, अखे घर पाईये ॥२॥
नाभि कमल के माहि, भँवर गुँजास है।
सोहं शिखर के बीच, पीया का वास है ॥३॥
उस पीये की मौज, अनौखी देखिये।
कीजे मंगलाचार, अगोचर पेखिये ॥४॥
अचल अखण्डी धार, रमझ में जोविये।
कर सतगुरु को संग, हीर निज पोविये॥५॥
गुरु मिल्या "सुखराम" सहि शिर हाथ है।
कहता 'ईसरराम' लखत की बात है॥६॥

भजन (३६) राग मंगल, प्यारी पद

प्यारी ए ! जाग्रत विश्वे जीव, बसत है नैन में।
स्वप्ने तेजस जा, कण्ठ की सैन में ॥१॥
प्राज्ञ हृदय स्थान, सुषोपति धुंध है।
चौथा तुरिये नाभि, करत तिहुं गुञ्ज है ॥२॥
मेरा गाँव घर दूर, अठा का नाय है।
तहाँ नहीं सकल संसार, धूम नहीं छाय है ॥३॥

अगम देश स्थान, जात अजात है।
मेरा दिवाना देश, चलो कोई साथ है ॥४॥
ऐसा ब्रह्म प्रकाश, अनोखा रूप है।
दृष्ट मुष्ठ में नाहि, अकल अनूप है ॥५॥
चौदह लोक के पार, अलोकी आप है।
वहाँ का लखणा दुर्लभ, अचल अमाप है ॥६॥
तूँ तत असि निरवाण, पद यो सांच है।
'ईसरराम' अरूप, अखै अवाच है ॥७॥

— भजन (३७) राग कन्हड़ा, चौपाई पद

सांग फकीरी भेद न पावे, भूल भटक दोजुग में जावे ॥टेर॥
करामात सों जग भरमावे, डरती दुनिया पावां आवे।
सिद्धाई की जग में शोभा, जनम जनम का पड़सी रोभा ॥१॥
उड़ जावे गढ़ जावे जोगी, दोय बात का कहिये रोगी।
देह पलटे जोगी अवधूता, उण साधू को जाणू भूता ॥२॥
राख लगावे शंख बजावे, गधा मुक्ति क्यों नहीं पांवे।
परचा देवे दोष बतावे, उन परचाला की देह क्यों जावे ॥३॥
नार्डि़ वेद होय देत दवाई, औरों जिवावे आप क्यों मरजाई।
मूठ चलाय मनुष्य को मारे, राज करेनी तेरे सारे ॥४॥
शील शतोष जत रू मत है, सांच सार नाम एक सत है।
आशिक होय मिले कोई हम से, ''ईसरराम'' काम नहीं यम से ॥५॥

भजन (३८) राग कान्हड़ा, चौपाई पद

अण समझ्यां को लखत नहीं आवे, समझ्यां संत परम पद पावे ।।टेर।।
कथणी बकणी से ज्ञानी ना कहता, साधु रहत वचन की बहता।
सत ही भाखे असत नहीं बोले, जवहरी आगे हीरा खोले ।।१।।
अन्तर ध्यान धरे जन शूरा, परसत ब्रह्म पावे पद पूरा।
सोहं जाप जपे उर मांही, चेतन पुरुष प्रकट्या सांही ।।२।।
अकल अजूणी अचल नहीं चलता, ज्यूँ जल बीच चन्द्र नहीं गलता।
त्रिविध ताप ताहि नहीं लागे, देह इन्द्रिय मन बुद्धि से आगे ।।३।।
अक्षय अनामी अखण्डा स्वामी, आप में आप बसे अन्तर्यामी।
नभ ज्यों अडिग आसन सब माही, हलत न चलता डोलत नाहीं ।।४।।
गुरु ''सुखराम'' मिल्या अविनाशी, ''ईसरराम'' गया नहीं आसी।
बन्धन मुक्ति दोनों से न्यारा, सत चेतन है सब घट प्यारा ।।५।।

भजन (३९) राग कन्हड़ा, चौपाई पद

आतमराम सकल प्रकाशी, हरष न शोक सदा अविनाशी ।।टेर।।
भूख रु प्यास प्राण का धर्मा, संकल्प विकल्प मन का सरमा।
अनआतम का जनम रु मरणा, सत चेतन का लीजे शरणा ।।१।।
अनहद शब्द आकाश का सुणिया, शूँ शू शब्द वायू का बणिया।
तेज शब्द भुक भुक जो करता, जल का शब्द चुलचुल जो चलता ।।२।।
पृथ्वी शब्द कट कट सो बोले, पाँचों शब्द सो भिन्न भिन्न खोले।
इन पाँचों का चेतन साकी, अफुर समान अवाच अलाकी ।।३।।

ब्रह्मण्ड पोल ईश्वर की माया, स्थूल शरीर जीव को आया।
अखै बेरंग में एक न दोई, आपहि आप और नहिं कोई ॥४॥
धन "सुखराम" निर्मल सत नूरा, एक अखण्डी ब्रह्म हजूरा।
"ईसरराम" गुरु अगम अपारा, नहिं है हलका नहिं है भारा ॥५॥

भजन (४०) राग भैरवी पद

लख गूँगे ज्यूँ आ सैन है, मुख कह्या वरण नहीं आवे ॥टेर॥
गूँगे ने उपदेश बताया, सैन सैन में वह समझाया।
वह फिरे मस्त मन मांयने, निज ऐसा आनन्द भावे ॥१॥
बहरा हो सो लेवे विचारी, आंधा निरखे रचना सारी।
कोई पँगुला हो सो पूगसी, मिल टूँटा ताल बजावे ॥२॥
अगमदेश की आई सैनाणी, विरला हरिजन लेवे पिछाणी।
सत बड़ा कठिन यह राय है, कोई पूगे सो पद पावे ॥३॥
गुरु "सुखराम" अखै घर मांही, "ईसरराम" बसत हैं वांही।
निज सुखिन सुख धाम है, फिर नहिं आवे नहिं जावे॥४॥

भजन (४१) राग आसावरी पद

साधोभई ! अगम पन्थ दुहेला।
भेद अभेद भेद से न्यारा, समझ्या सैन लखेला ॥टेर॥
बंका राह वैराग्य ज्ञान का, पग तां नहीं ढबेला।
जत मत योग शूरवां साजे, सो जन पार लंघेला ॥१॥

व्याकुल भया शुद्ध बुद्ध ना तनकी, लग्या शब्द का सैला।
घायल होय फिरत जग मांही, जीवत मौत मरेला ॥२॥
धर बिन धाम चरण बिन सेवा, कर बिन दण्डोत करेला।
लग रही तार अखै शुन मांही, सदा आनन्द में रहेला ॥३॥
धन ''सुखराम'' मिल्या गुरु पूरा, बिन मुख बात कहेला।
निःअक्षर नैनों बिन निरख्या, ''ईसर'' बेअंग खेला ॥४॥

भजन (४२) राग आसावरी पद

साधोभाई ! हरिजन हरि का प्यारा।
आठों पहर लीन उन मांही, जन्म मरण से न्यारा ।टेर॥
पारब्रह्म का खेल अनन्तों, जड़ चेतन इक सारा।
नदी नाला मिल्या सिंधु में, कौन कहे जल न्यारा ॥१॥
घर बिन बास बास बिन बस्ती, युग बिन योग अपारा।
ओ रावलियो सब घट व्यापक, निगह कियां उर न्यारा ॥२॥
जल वायु धर नहीं आकाशा, शशि सूर नहीं तारा।
अकल अरूपी देश दिवाना, परस्या जिन हलकारा ॥३॥
धन ''सुखराम'' मिल्या गुरु पूरा, पलट्या हंस अपारा।
''ईसरराम'' आदि का स्वामी, अखै अमर घर धारा ॥४॥

भजन (४३) राग श्याम कल्याण पद

बेगम पद का भेद अलेदा, बेगम असैन मिलाय।
बेगम ढूंढण चली सुहागण, आप ही रही विलाय ।टेर॥

बेगम बेगम सभी कहत है, बेगम कह्यो नहीं जाय ॥१॥
बेगम की गम कैसे लीनी, बेगम अगम अथाय ॥२॥
परा पश्यन्ती मध्यमा वैखरी, बेगम शब्दां में नाय ॥३॥
जो कोई नभ की रेश लखी है, अविचल बेगम अचाय ॥४॥
बेगम पद कथणी में नाही, सारा ही शब्द थकाय ॥५॥
कहता है सो है भी नाही, ज्यूँ गूँगा गुड़ खाय ॥६॥
नाम रूप "ईसर" भी नाही, सत बेगम अचलाय ॥७॥

भजन (४४) राग बरवा, आसा पद

साधोभाई ! सत शब्दां रा जादू मारा।
सोहँ मन्त्र चलाया मेरे सतगुरु, भव सिंधु से तारा ॥टेर॥
सत संगत शुभ इच्छा कर बैठा, जादू लग्या अखारा।
निःकलंक शब्द कलेजे खटक्या, किया कर्म से न्यारा ॥१॥
नौ सौ नाड़ी चढी खुमारी, बदन बदन रंग न्यारा।
अर्ध उर्ध बिच मनवा छकिया, पीया हरिरस भारा ॥२॥
जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति छेद्या, चौथा देश हमारा।
कुदरत खेल कह्यो नहीं जावे, देश विदेश अपारा ॥३॥
जादू लग्यो ओ अनन्त सन्तों के, समर्थ जादूगारा।
जादू लग्या सो परम पद पाया, जन्म मरण मिट्या कारा ॥४॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, मो में जादू डारा।
"ईसरराम" भया सुन व्याकुल, ओत प्रोत पिव प्यारा ॥५॥

भजन (४५) राग बसन्त पद

ऐसे मन खेले होरी, जाकी आवागमन मिटोरी ।।टेर।।
जग महीनो काया रोपणी, दिन तीस फाग रम्योरी।
खड़ी रहे जीत हुक्म मालिक का, मुहुर्त फूँक दियोरी ।।१।।
सभा चोक कहि झाड़्यो झपट्यो, प्रेमको नींद छण्ट्योरी।
भ्रम कम्पी सो गई विलाई, गुरु गम ढ़ोल बज्योरी ।।२।।
भाव पहन बागो जतनकी कच्छनी, रमझ को पेच झुक्योरी।
सुरत मदिला निरत की सैली, चेतन तुर्रो टंक्योरी ।।३।।
लगन घूघरा रिमझिम बाजे, धीरप पाँव धर्‌योरी।
सासउसास दोऊ डंडिया जोड़ो, नाम की चोट सहयोरी ।।४।।
अर्ध उर्ध बिच धूम मचत है, सब नर नार देख्योरी।
हरिजन मिल सम नाच नचतहै, बिन पग फेरि फिर्‌योरी ।।५।।
धन ''सुखराम'' मिल्या गुरु पूरा, निशदिन ख्याल खेलोरी।
''ईसरराम'' शोक नहीं संशय, ऐसी निरोगी आ होरी ।।६।।

भजन (४६) राग रेखता पद

सत संगियो सोरा रहिज्यो, थे भजन राम का कीज्यो।
सत भाव राखज्यो भक्ती, हो जावे जीव की मुक्ती ।।टेर।।
गुरु चरणों में आया, मैं नाम पदार्थ पाया ।।१।।
सोहं शब्द समाया, मैं हरदम ध्यान लगाया ।।२।।
सत दीया नाम का डंका, तब मिट्या यमों का शंका ।।३।।

अणघड़ राम अजाया, सत परस परम पद पाया ॥४॥
यों आवागमन मिटाया, संत बहुरि जन्म नहिं आया ॥५॥
संत सत में जाय समाया, वहां अमरलोक बसाया ॥६॥
धन "सुखराम" गुरु पाया, सत "ईसरराम" यश गाया ॥७॥

भजन (४७) राग रेखता पद

सत सुमरण में चित लागा, यम दूर अगाड़ी भागा।
म्हाने मिलग्या सतगुरु ऐसा, सत दिया ज्ञान उपदेशा ॥टेर॥
सतगुरु शब्द सुणाया, वा दिन से भजन समाया ॥१॥
छोड़ी जगत की आसा, सन्तों में लिया निवासा ॥२॥
मोह की नींद उडाई, भक्ति में जीव जगाई ॥३॥
अखै देश घर न्यारा, जहाँ सत स्थान हमारा ॥४॥
धन "सुखराम" गुरु पूरा, मैं सन्मुख रह्या हजूरा ॥५॥
सत "ईसरराम" गुण गाया, सतसंग से परम पद पाया ॥६॥

भजन (४८) राग आशावरी पद

साधो भाई ! कठिन योग की रहणी।
बिन रहणी आतम नहीं दरसे, लख चौरासी बहणी ॥टेर॥
जोग कमाय जुगति नहीं पावे, भटकत फिरे अजाणी।
विषय रस माहि खावे भचीड़ा, यूं कर पड़े भुलाणी ॥१॥
रहणी रहे प्रेम रस पीवे, सो साधु प्रमाणी।
ब्रह्मादिक का भोग नहीं चाहै, निज आतम को जाणी ॥२॥

रहणी रहे सो युग युग जीवे, तुच्छ विषय को जाणी।
सारां माहि भऱ्या परमेश्वर, यह अनुभव प्रमाणी ॥३॥
धन ''सुखराम'' मिल्या गुरुपूरा, मुझ पर करी महराणी।
''ईसरराम'' अलमस्त फकीरा, झीणी रहस पिछाणी॥४॥

भजन (४९) राग आशावरी पद

गुरुजी री गुञ्ज शिष्य ने लीनी, दिया ज्ञान विचारा।
ज्ञान वैराग गाढ़ा धर उर में, भव जल उतऱ्या पारा ।टेर॥
सत की पाल युक्ति कर बांधी, टूटा विषय अचारा।
पाया भेद अनादू दरस्या, सत चित आनन्द अपारा ॥१॥
आनन्द तीन युगति कर जोया, नाम रूप आकारा।
तीनों ताप यम का नहीं व्यापे, ताँ नहीं काल का चारा ॥२॥
गूँगा की गति गूँगा जाणे, निःअक्षर निज धारा।
जल में चन्द्र कबहु ना भीजे, वोही पीव हमारा ॥३॥
धन ''सुखराम'' मिल्या गुरुपूरा, मिट गया तिमिर अँधारा।
''ईसरराम'' जुगत कर जोया, अक्षय अगम अपारा ॥४॥

भजन (५०) राग देश बधावा पद

गुरुजी! मेरा बन्धन छुड़ाया ए। –
शब्द सुणाया निज नाम का, उर में लिव लायाएं ।टेर॥
कर चेतन गुरु शब्द जिलाया, त्रिगुण ढाया ए।
रङ्ग लगाया गुरु ज्ञान का, जब मन को पढ़ायाए॥१॥

रोगी का रोग मिटाय के, गुरुजी अमृत पायाए।
आनन्द भया दिल माहिने, सुखसागर नहाया ए ॥२॥
सागर न्हाया तपत बुझाया, दुतिया भ्रम उडाया ए।
शुन में धुन उनमुनि लागी, केवल दरशाया ए ॥३॥
पूरव जागी दुविध्या भागी, सोहम् मिलाया ए।
सतगुरु परस्या अखण्ड अनामी, शान्ति घर आया ए ॥४॥
गुरु "सुखराम" मिल्या अविनाशी, नभ ज्यूँ थाया ए।
"ईसरराम" सकल घट पूरण, गुरु मुख गाया ए ॥५॥

– *भजन (५१) राग लावणी पद*

सतगुरु शरणे जाय, हरिभज लेणा, हाँ हरिभज लणा।
तेरा अवसर बीता जाय, देर नहीं करणा ।टेर॥
नर नारायण देह, मुशकिल मिलणा।
तुम सत को लेवो विचार, असत पर हरणा ॥१॥
तेरा धन जोभन परिवार, थिर नहीं रहणा।
यह जातां न लागे वार, सांच सुन लेणा ॥२॥
मन अनआतम अभिमान, कबहुं नहीं करणा।
जो करोगे अभिमान, चौरासी पड़णा ॥३॥
तुम उतरिया चाहो पार, गुरु का ले शरणा।
सदा रहो आधीन, ध्यान हरि धरणा ॥४॥
गुरु "सुखराम" अमर, कबहुँ नहीं मरणा।
सत "ईसर" स्वरूप संभाल, रहो गुरु चरणा ॥५॥

भजन (५२) राग लावणी पद

जगत सब स्वप्ने ज्यों माया।
सांच कहूँ मन मान, जगत सब स्वप्ने की माया।टेर॥
धरा अम्बर बिच वस्तु दीसे, थिर नहीं रहवाया।
अन्त समय सब विलस जायगा, काल सभी खाया ॥१॥
मात पिता सुत नारी देख के, रीझ मती भाया।
नाम रूप सब कल्पित दीखे, क्यों तुम भरा माया ॥२॥
या जग में हरि गुरु संत साचा, अगम निगम गाया।
जीव दुःखी देख्या भवसागर, वपू धर आया ॥३॥
"सुखराम" गुरु पर उपकारी, भिन्न भिन्न कर समझाया।
"ईसरराम" गुरु के चरणा, अक्षय आनन्द पाया ॥४॥

भजन (५३) राग प्रभाती पद

काम क्रोध के सांडे लागो, करी बड़ाई नागी रे।
साध संगत की सार न जाणी, झूँठी धिकाई आगीरे ।टेर॥
चार खानि में भटक कर आयो, कठे न पाया जोगीरे।
हीरा सरीखा जन्म अमोलख, क्यों नहीं भजे बैरंगीरे ॥१॥
आठ पहर कर्मों में जाग्यो, नहीं भजन में जागीरे।
मन के लार मारया भचीड़ा, रीतो रह्यो अभागीरे ॥२॥
बालपणो तो खेल गमायो, जोभन में विष भोगीरे।
बूढापो झट आण विलूम्बयो, काठ उदाई खागीरे ॥३॥

जिवड़ो काया छोड़ चल्यो है, जमड़ों लीनो सागीरे।
इधर उधर अब भटका मारे, मार मुग्दराँ लागीरे ॥४॥
धर्मराजजी लेखो माँगे, बोल सके न अभागी रे।
तपत कुण्ड में ऊँधो टेर्‌यो, पापी बड़ो कजागीरे ॥५॥
मनुष जनम में चेत्यो नाहीं, मोक्ष को घर त्यागीरे।
लख चौरासी फाँसी लीवी, जन्म जन्म को रोगीरे ॥६॥
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, दुतिया दुर्मति भागीरे।
"ईसरराम" भजो भगवाना, सतगुरु मिल्या बड़भागीरे ॥७॥

भजन (५४) राग प्रभाती पद

साधोभाई ! राम नाम ततसार।
पांच वर्ष की बाल अवस्था, दुविद्या तजी असार ।टेर॥
ध्रुवजी ध्यान धरिया मालिक का, जत मत लीना धार।
राज पाट की आशा छोड़ी, बस्यो वैकुण्ठां जार ॥१॥
भक्त प्रहलाद पिता हिरणाकुश, बहुत कर्‌यो अहंकार।
खम्भ फाड़ हिरणाकुश मार्‌यो, लीनो प्रहलाद उभार ॥२॥
रावण बैर राम से कीनों, लेग्यो सीता नार।
अन्तर बलि को गर्व गालियो, बैठो लंका हार ॥३॥
मोरध्वज की जरणा भारी, सन्तों के आज्ञाकार।
सांई कारण पुत्र विनास्यो, दर्शन दीयो मुरार ॥४॥
विप्रों वैर रविदास से कीनों, शुद्र घर लीयो अवतार।
चार युगों की काढ़ी जनेऊ, सहाय करी हरि आर ॥५॥

धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, कहां लग करूँ पुकार।
"ईसरराम" भक्तों की महिमा, निशिदिन होत अपार ॥६॥

भजन (५५) राग लवणी पद

बूझो वेद कतेब शास्त्र गीता, मो मन की पत याही।
जो सुख शेष सनकादिक वँच्छे, सो सुख चरणों माही ॥टेर॥
तीर्थ जाय करे जड़ पूजा, पार ब्रह्म के ताही।
आतम छोड़ पत्थर को पूजे, वहां कछु पावे नाहीं ॥१॥
अनन्त कोटि संत हुआ जगत में, गुरुगम से गम पाही।
जो सतगुरु की माने नाहीं, सीधो चौरासी जाही ॥२॥
गुरु है भक्ति मुक्ति के दाता, गुरु है अलख गोसांही।
गुरु है पारब्रह्म परमेश्वर, गुरु बिन दूजा नाही ॥३॥
एक गुरु दूजा परमेश्वर, आ यूँ जगत ठहराही।
जन "ईसर" दोय कर माने, बाधा यमपुर जाही ॥४॥

इति गायन के भजन पद समाप्त

श्री श्री १०८ श्री स्वामी ईसररामजी महाराज कृत

काव्य (छन्द) भाग

दोहा छन्द

सतगुरु शरणे आवियो, मेरी सुणो पुकार।
जन "ईसर" चरणे रहूँ, मुझको लेहु उभार ॥१॥
मैं जीव तहूँ सतगुरु, तुम हो समर्थ सत।
"ईसर" दीन दयाल हो, जीवन करिये गत ॥२॥
पड़ियो हूँ अन्ध कूप में, सतगुरु पकड़ो बांह।
जन "ईसर" मोही काढ़लो, करड़ी ताणो कांह ॥३॥
मैं कामी मैं लालची, कूड़ो बड़ो कंगाल।
जन "ईसर" मैं थूल हूँ, मेरो कौन हवाल ॥४॥
सतगुरु सायर समान हो, मैं हूँ जल का जीव।
जन "ईसर" गुरु गम बिना, बहुत दुःखी हूँ पीव ॥५॥
मोह माया की भाकसी, सतगुरु काढ़ो आप।
"ईसर" जन कपूत हूँ, तुम हो साँचे बाप ॥६॥
इन्द्र स्वरूपी आप हो, तेरो नहीं है थाग।
जन "ईसर" भूलो मती, सन्मुख राखो लाग ॥७॥
विद्या का गुणवान हो, खोज लिया ब्रह्मण्ड।
जन "ईसर" परब्रह्म हो, शरणे आयो पिण्ड ॥८॥

बाल्मीकि बेहोश था, मनुष्य मारता एक।
जन "ईसर" सतगुरु मिल्या, महिमा भई अनेक ॥९॥
तीर्थ व्रत बहुते किया, शिव शंकर की नार।
जन "ईसर" वर पायके, प्रलय वारम्वार ॥१०॥
रमता नारद आविया, शक्ति लिवी सुसंद।
जन "ईसर" गल माय से, काढि दिये सब फंद ॥११॥
नारद मुनि यूँ बोलिया, मत कछु करिये रीस।
जन "ईसर" गल माहिने, जी धड़ तेरा शीस ॥१२॥
शंकर स्वामी आवियाृ शक्ति गई रिसाय।
जन "ईसर" वर पायके, प्रलय कैसे जाय ॥१३॥
शंकर स्वामी बोलिया, सुणो हमारी बात।
बिन पूछे "ईसर" कह्यो, कैसे जान्यो जात ॥१४॥
बिन ब्याही सूजे नहीं, नहीं लगे परमोद।
जन "ईसर" संयोग से, मते जले शीशोद ॥१५॥
शिवजी पंछी उडायके, सत सुनायो नाम।
जन "ईसर" सुनतां थकां, अक्षय पायो गाम ॥१६॥
ईण्डा शब्द सुण पावियो, क्षण में गयोजु पलट।
जन "ईसर" गर्भ माहिने, आण बिराजे झट ॥१७॥
अन्दर ध्यान लगावियो, नहीं दूसरी बॉस।
जन "ईसर" जड़ जीव की, सहजे काटी फॉस ॥१८॥

पूरवले संयोग से, आन समायो देश।
जन "ईसर" महादेव सूँ, सच्चो सुण्यो उपदेश ॥१९॥
शंकर स्वामी बोलिया, सुख की कहिये बात।
जन "ईसर" बहु सुख है, साची सो कह मात ॥२०॥
नाहि पड्यो गर्भ माहिने, निकस्यो सो मुखद्वार।
जन "ईसर" ऐसी फुरी, चलिया नीर विकार ॥२१॥
पिञ्जर हेलो मारियो, शब्द सुणे जु कान।
जन "ईसर" वन माहिने, धरियो अखण्डी ध्यान ॥२२॥
दृढ़ासन शुकदेवजी, गुरु बिन दिवी न ठोड़।
जन "ईसर" वैकुण्ठ से, पाछो दीनो मोड़ ॥२३॥
शुकजी कह कर जोड़ के, मुझ की काटो खोट।
जन "ईसर" नहीं गुरुमुखी, जाव हूँ द्वारे लोट ॥२४॥
अन्तर्यामी बोलिया, सुणो हमारा बेण।
जन "ईसर" सतगुरु करो, जनक विदेही सैण ॥२५॥
त्याग करो दिल माहिने, कनक कामनी संग।
जन "ईसर" शुकदेव कह, कहा लगायो रंग ॥२६॥
जनक राज की द्रिष्ट में, स्वामी मिल्याजु शीश।
हाथी घोड़ा मोकला, समाज मेलो हींस ॥२७॥
सात रोज ठाडे रहो, खड़े रहो दिन रात।
जन "ईसर" गुरु गूँज की, बहुरि करेंगे बात ॥२८॥

नृपति अन्दर को लखे, सुख को घणो गुमेज।
जन "ईशर" सो स्वप्न में, सुन्दरि भोगी सेज ॥२९॥
एक पलक के माहिनें, माया दीनो उपाय।
जन "ईसर" पल के खुले, जाही जाय समाय ॥३०॥
जनक विदेही ने कह्यो, लावो शुक बुलाय।
जन "ईसर" मिलतां थकां, मन की मिटी बलाय ॥३१॥
प्याला भर कर दूध का, पकड़ झलाया हाथ।
जन "ईसर" सुरता डिगे, काट्यो जावे माथ ॥३२॥
माया माहि ढालिया, दिखलाया रणिवास।
जन "ईसर" मन भय बड़ो, सुरत डिगी ना सास ॥३३॥
शुक जाय चरणे पड़्या, करो कृपा निमी नाथ।
जन "ईसर" सतसंग कर, मिटे भ्रम भय साथ ॥३४॥
नृपति राजा यूँ रहे, जल में जैसे फूल।
जन "ईसर" चेतन किया, मुझकी मुझमें भूल ॥३५॥
जनक विदेही गुरु किया, मनवो दे पलटाय।
जन "ईसर" गुरुदेव की, महिमा कही ना जाय ॥३६॥
सतगुरु जवहरि जाणिये, हिरण कीट कन्साल।
जन "ईसर" गुरु गम गहे, वही करे प्रतिपाल ॥३७॥
तुम साचा मैं झूँठ हूँ, मेरी नहीं प्रतीत।
जन "ईसर" मुझ ऊपरे, दया करे रमतीत ॥३८॥

सतगुरु चन्दन बावना, आवे वास सुगन्ध।
जन "ईसर" ऐसी करो, मेटो जन के फन्ध ॥३९॥
तुम बाजीगर मैं बांदरा, थांके हाथां डोर।
जन "ईसर" पलटाय दो, शरणे आयो तोर ॥४०॥
तुम शुद्ध गंग जल रूप हो, मैं हूँ बड़ो अशुद्ध।
जन "ईसर" चरणे रहूँ, करिये मुझ को शुद्ध ॥४१॥
सतगुरु मेरा श्याम हो, गुण से बड़ा अतीत।
जन "ईसर" निर्विकार हो, गोचर मन सब जीत ॥४२॥
रेण अन्धेरी अज्ञ मैं, तुम हो पूर्ण भाण।
जन "ईसर" निरलेप हो, मैं क्या करूँ बखाण ॥४३॥
सतगुरु मेरा शिरधणी, व्यभिचारी हूँ श्याम।
जन "ईसर" ऊजर नहीं, विरद संभालो राम ॥४४॥
मनवो मेरो लालची, नहीं नाम में लाग।
जन "ईसर" केवल रहे, धन धन मेरे भाग ॥४५॥
तन मन गुरु को सौपियां, यही मुक्ति की ठोड़।
जन "ईसर" कृपा करी, सुरत रहीं मन जोड़ ॥४६॥
कृपा कर गुरुदेवजी, मन को कियो जु शिष।
जन "ईसर" सिमरण लगा, छोड़ दिया सब विष ॥४७॥
सुमिरण तो सब से सिरे, सन्तन काढ्यो शोद।
"ईसर" गुरु प्रताप से, मन लिया परमोद ॥४८॥

ध्रुव रट्यो प्रहलाद ने, सिमट्यो शेष महेश।
जन "ईसर" जत मत से, पावे, आदू देश ॥४९॥
देश दिखाया भय मिट्यो, बहुरि जनम नहीं आय।
"ईसर" गुरु प्रताप से, सत में रहा समाय ॥५०॥
पांच तंत तिहूँ ताप को, जीते हरि का दास।
जन "ईसर" तत में मिले, कर विषयों का नास ॥५१॥
सैल लग्या गुरु ज्ञान का, झट उठ्यो वैराग।
जन "ईसर" गुरु गम लखी, मन भयो अनुराग ॥५२॥
जत मत दीनों सूरमा, सन्तन काढ्यो सार।
जन "ईसर" अज्ञान को, लीयो भेड़ ज्यूँ मार ॥५३॥
वैराग बड़ो है फौज में, चवड़े देवे बजाय।
जन "ईसर" मोह मारियो, सांची सैन सजाय ॥५४॥
आन फिरी निज नाम की, धन ऊगो दिन आज।
जन "ईसर" बैरी मूँआ, पायो अक्षय राज ॥५५॥
नाम राज की चौकि को, विरला साजे सूर।
जन "ईसर" आसा तजे, सांवत पावे नूर ॥५६॥
सतसंग साचा प्रेम का, ज्ञान ध्यान का कोट।
जन "ईसर" चेतन रहो, गोला लगे न चोट ॥५७॥
करमां की चौकी उठी, सत बैठी है आय।
"ईसर" गुरु प्रताप से, कबहूँ न लूटा जाय ॥५८॥

सतगुरु मेरा धनपति, निरधन को धन देत।
जन "ईसर" लोचन खुले, नीर पड़ी निज रेत ॥५९॥

मन को जीते मुगत है, मुक्ति खाण्डा धार।
जन "ईसर" तृष्णा जले, तब जन उतरे पार ॥६०॥

"सुखराम" सुख समन्द में, नदियाँ रही समाय।
जन "ईसर" निरभय भया, सत चेतन थिर थाय ॥६१॥

साहब तो निरदोष है, मत करज्यो को रीस।
सुखसागर "सुखराम" है, भली करण जगदीश ॥६२॥

** नीति दोहा छन्द **

विद्या दीजे शूर को, बधे बेल बढ़ जाय।
कायर को मत दीजिये, जड़ा मूल से ढाय ॥३३॥

सौ पनिहारिन कुढ़ रही, पानी एकण धार।
जन "ईसर" ठहरे नहिं, फूटे घड़े लिगार ॥३४॥

ऊँचा चढ़ कर बैठता, गादी गोखां राक।
जन "ईसर" वह मानवी, भये मसानां खाक ॥३५॥

करता दीनो मानखो, चेतो मूढ अजाण।
जन "ईसर" जग में लखो, चेतन सतगुरु भाण ॥३६॥

तीन गुणों में राचिया, पाछी लिवी न सुद्ध।
जन "ईसर" इण मूल में, मोटो पड़सी युद्ध ॥३७॥

* चेतावनी-उपदेश का अंग (३) *

अरिल्ल छन्द चान्द्रायण

राम रोटला पोय, सके तो पोय रे।
धन जोभन की बार, बहे दिन दोय रे॥
उपत खपत नित होय, अंत जग जाण को।
हरहाँ "ईसर" बिन भजियां भगवान, धिक है मानखो ॥१॥
राम नाम की तार, लगी मत तोड़ रे।
झूँठी माया छोड़, साँच को जोड़ रे॥
सत साहब का नाम, झूँठ आ खोड़ रे।
हरहाँ "ईसर" बिन भजियां भगवान, पावे नहीं ठोड़रे ॥२॥
और अविद्या झूँठ, भजन ततसार रे।
सत सुमरण की तार, लगा एक सार रे ॥
भजन कियां से संत, उत्तरिया भव पार रे।
हरहां "ईसर" बिन भजियां भगवान, नहीं इतबाररे ॥३॥
तब लग राम लडाय, देही मैं तेज रे।
दोड़ो बारम्बार, मती कर जेज रे ॥
जेज कियां दुःख होय, काल की बाज रे।
हरहाँ "ईसर" भज लीजे निज नाम, सरे सब काजरे ॥४॥
भजन कियो नहीं धार, हाथ से पुन रे।
जमड़ा लेसी घेर, बौलाऊ कुण रे ॥

जब लगे बराबर जोर, जीव शिर मार रे।
हरहाँ "ईसर" गुरु बिन लगे न जोर, कौनले ताररे ॥५॥
कर सतगुरु को संग, चलो भल बाट रे।
कर्म भ्रम टल जाय, जमों की झाट रे॥
ए आडा पर्वत जोर, अबड़ा घाट रे।
हरहाँ "ईसर" बिन भजियाँ भगवान, खुले नहीं पाटरे ॥६॥
कामी कुब्दी कपट, दगे से चालता।
तन मन नहीं सन्तोष, नारकी मालता॥
बे होसी कुत्ता काग, गंडूरा डोड रे।
हरहाँ "ईसर" तूँ गुरुचरणों चित लाग, चौरासी छोड़रे ॥७॥
घर पदवी तो छोड़, लगाई खाख रे।
दूणो बाद विवाद, दूजी नहीं आगरे ॥
मन माया के माहि, राम नहीं याद रे।
हरहां "ईसर" भजन कीयो नहीं जाय, हुआ क्यों सादरे ॥८॥
संगत करी दिन रात, लग्यो नहीं ज्ञान रे।
मन बुद्धि बस नाहि, कर्म में ध्यान रे ॥
ज्यूँ काली कमली माहि, लग्यो नहीं रंगरे।
हरहा '''ईसर" वहां पायो नहीं निजनाम, सुरत में भंगरे ॥९॥
नाटक चेटक बहुत, मरक से गावता।
आतम की गम नाहि, कहा पद पावता॥

कर सन्तन को संग, विषय में जावता।
हरहाँ "ईसर" वे पड़िया दहड़ में जाय, गड़ींदा खावता ॥१०॥
वरण सिंह को होय, जम्बू की चाल रे।
दुनिया को डहकाय, मिट्यो नहीं काल रे ॥
करे कपट की बात, बोलता झूँठ रे।
हरहाँ "ईसर" भजन बिना बेकार, दीखता भूतरे ॥११॥
राता गेरू घोल, रंगाया कापड़ा।
भीतर लग्या नहीं रंग, चलत है ताकड़ा ॥
सांग फकीरी धार, मनां में मोद रे।
हरहाँ "ईसर" वह कहने का अवधूत, पायो नहीं खोदरे ॥१२॥
पन्थ पन्थ में धेग, लगी है जोर रे।
हरि भजन नहीं याद, राम का चोर रे ॥
आशा तृष्णा माहि, बह्या जा डूबता।
हरहाँ "ईसर" वह सीधा जमपुर जाय, कूकर्मी कूकता ॥१३॥
सांस उसासां राम, भजे सो साधरे।
मन धीरज सन्तोष, तजे विवाद रे ॥
गुरु संतन का दास, अगम पंथ ध्यावता।
हरहाँ "ईसर" वे अमरापुर जाय, हरिगुण गावता ॥१४॥
नव नाथन का नाथ, सभी घट जाणरे।
काना दर्शन पहन, मती तूँ ताण रे॥

तिहूँ गुणों का पति, हरि का रूप रे।
हरहां "ईसर" दीसत माया खण्डित, आप अरूप रे॥१५॥
कागां गिरजां खाय, कुत्ता को जोय रे।
के कुष्टी हो जाय, उनके नहीं कोय रे॥
यह है पशू की रीत, सन्त की नाय रे।
हरहां "ईसर" अग्नि यज्ञ हुवे होम, घृत हो मायरे ॥१६॥
पांच पचीसूँ पकड़, मन को मारिये।
अकर्म दीजे छोड़, सत को धारिये ॥
आठ पहर लव लीन, राम से प्रीत रे।
हरहां "ईसर" काम क्रोध मद त्याग, सन्तन की रीतरे ॥१७॥
गुरु चरणें में चित, रहे तो राखिये।
निशिदिन राम लडाय, सत मुख भाखिये ॥
आवागमन टल जाय, हरिगुण गाविये।
हरहाँ "ईसर" संगत करो अखूट, परमपद पाविये ॥१८॥
संगत सार विचार, सन्तन की कीजिये।
साचा हरिजन जोय, राम रस पीजिये ॥
शुन में धुन लगाय, हरिगुण गाविये।
हरहाँ "ईसर" निशिदिन राम लड़ाय, अखै धर पाविये ॥१९॥
सतगुरु बड़ा दयाल, देत निज हीर रे।
खरच्यां खूटे नाहि, बंधावे धीर रे॥

पावे शील सन्तोष, मिटे तिहुं ताप रे।
हरहाँ "ईसर" रहो सतगुरु की ओट, मिलावे आपरे ॥२०॥
सतगुरु बांधी रीत, छोड़ मत टेक रे।
भ्रम अँधारा मेट, ब्रह्म को देख रे ॥
सर्व प्रकाशी जाण, नभ में सूर रे।
हरहाँ "ईसर" यूँ लख लीजे राम, सकल भरपूरे ॥२१॥
पांच विषय दश दोष, गुणों को पेल रे।
षट् उर्मी टार विकार, निरन्तर खेल रे ॥
मन बुद्धि सब थक जाय, सुरत सत जोयरे।
हरहाँ "ईसर" जहाँ सच्चिदानन्द अरूप, और नहीं कोयरे॥
अर्ध उर्ध के बीच, सुरत को फेर रे।
सोहं शब्द विचार, मन कर झेर रे ॥
आतम को आधार, उन्हीं को हेर रे।
हरहाँ 'ईसर" घट बिच ऊगा सूर, मिट्या अंधेर रे ॥२३॥
इडा पिङ्गला साध, सुषमणा जोविये।
नैन नासिका बीच, सोहं को पाविये ॥
तिरवेणी स्थान में, ब्रह्म प्रकाश है।
हरहां "ईसर" त्रिवेणी उनमुन ध्यान, यही भल साच है ॥२४॥
नाभि कमल के माहि, शब्द का वास है।
हरदम धरता ध्यान, श्वास उश्वास है ॥

त्रिवेणी में हंस, चुगे मोताल है।
हरहां "ईसर" यह हंसों की रीत, हरि का लाल है ॥२५॥
नाभि उलट्या शब्द, हृदय में गूँजता।
पर बिन हंस लपटाय, कण्ठ में झुञ्जता॥
त्रिकुटी छेद्या घाट, दशवें जावणा।
हरहां "ईसर" अधर तख्तपर आप, अमरवर पावणा ॥२६॥
यह षट्चक्र का ध्यान, धरे जन सूर रे।
त्रिकुटी ध्यान अनूप, झलकता नूर रे॥
वहाँ अनुभव प्रकाश होय, शब्द धुन साजता।
हरहां "ईसर" अनहद घुरे निशान, गगन घर गाजता ॥२७॥
नाभि कमल के माहि, भँवर गुँजास है।
सोहं शिषर के बीच, पीया का बास है ॥
उस पीया की मौज, अनोखी देखिये।
हरहां "ईसर" कीजे मंगलाचार, अगोचर पेखिये ॥२८॥
जाग्रत विश्वे जीव, बसत है नैन में।
स्वप्ने तेजस जान, कण्ठ की सैन में॥
प्राज्ञ हृदय स्थान, सुषोप्ति धुन्ध है।
हरहां "ईसर" चौथा तुरिये नाभि, करत तिहुँ गुञ्झहै ॥२९॥
मेरा गांव घर दूर, अठे का नाय है।
तहाँ नहीं सकल संसार, धूप नहीं छाय है ॥

अगम देश स्थान, जात अजात है।
हरहां "ईसर" मेरा दिवाना देश, चलो कोई साथ है ॥३०॥
ऐसा ब्रह्म प्रकाश, अनोखा रूप है।
दृष्ठ मुष्ठ में नाहिं, अकल अनूप है॥
चौदह लोक के पार, अलोकी आप है।
हरहां "ईसर" वांका लखना दुर्लभ, अचल अमाप है ॥३१॥
शुन धरण गगन नहीं दोय, शशि नहीं सूररे।
अपरम् देश विदेश, दूर से दूर रे॥
गावे वेद पुराण, अक्षर नहीं छापरे।
हरहां "ईसर" निरमाया निरलेप, अनामी आप रे ॥३२॥
अखै रह्यो अवाच, वाचण में नायरे।
वेद रूप जब जाण, ओलख ले मायरे॥
षट् मत वेद पुराण, सास की दोररे।
हरहां "ईसर" वो कहणे में नाहिं, कहू कहां ओररे ॥३३॥
अचल अखण्डी धार, रमझ में जोविये।
कर सतगुरु को संग, हीर निज पोविये ॥
यूं कहता ब्रह्म विचार, लखत की बात है।
हरहाँ "ईसर" गुरु मिल्या "सुखराम", सही सिर हाथ है ॥३४॥

* निशाणी (३) *

गुरुगम ज्ञान समाया है। सत शब्दां ध्यान लगाया है ॥१॥

बेगम जीव जगाया है, सुरत को मन समझाया है ॥२॥
पांच तीन को धाया है, पचीसों पकड़ मंगाया है ॥३॥
जन्तरी ज्यूँ तार कढ़ाया है, कर्म का कीट झड़ाया है ॥४॥
अगम देश से आया है, नाम पदार्थ लाया है ॥५॥
त्रिवेणी चश्मा लगाया है, बंका राह उलटाया है ॥६॥
पग बिन बाट बहाया है, बिन रसना गोविन्द गाया है ॥७॥
मुख बिन तुरी ब जाया है, श्रवण बिन राग सुणाया है ॥८॥
शुन में तार लगाया है, पारब्रह्म लपटाया है ॥९॥
गुरु वचनों से न्हाया है, प्रेम पियाला पाया है ॥१०॥
दीवाना देश दिखाया है, वहां सुखमें सैज बिछाया है ॥११॥
धर नहिं अधर ठहराया है, वहांअलखअखण्डीथाया है ॥१२॥
सजनीकापीव मिलाया है, हिल मिल लाड लडाया है ॥१३॥
वहां रूप वरण नहीं काया है, अजाति अकल अजाया है ॥१४॥
आप को आप बताया है, अपना आप जस गाया है ॥१५॥
वहां नहीं धूप नहीं छाया है, सुमर्‍थ सो पद पाया है ॥१६॥
अक्षय गांव बसाया है, गैब का ऐब मिटाया है ॥१७॥
आप हि आप रहवाया है, "सुखराम" गुरु पाया है ॥१८॥
सब में सत समाया है, न कोई गया न आया है ॥१९॥
वां घर की सेन लखाया है, "ईसरराम" लख गाया है ॥२०॥

गर्भ चेतावनी को अंग

दोहा छन्द

"ईसर" गर्भ चेतावनी, कैसे वरणी जाय।
ये घर दीखे पार का, सुणो सभी चितलाय ॥१॥
निकर्मी को छोड़ के, पड़्या कर्म में आय।
पांच तंत गुण तीन से, या विध आतम थाय ॥२॥
नख चख मालिक चुपत से, मानुष दियो बणाय।
ऊँधो डाल गुञ्जार में, हुक्म बिना कहाँ जाय ॥३॥
आठ मास नव गर्भ में, बहुत दुःखी है जीव।
हे मालिक! वन्दन करूँ, अरज साम्भलो पीव ॥४॥
पसवाड़ा फिरता नहीं, हाथ पांव बन्ध मांय।
हुक्म दिलाओ साहबा, तुझको भूलूँ नाय ॥५॥
नर्क रक्त की भाकसी, क्यों भुगताओ मोय।
यह तन तेरा जीव है, मैं नहीं भूलूँ तोय ॥६॥
सन्तों आगे वीनती, तुझे करूँ अरदास।
एक पलक भूलूँ नहीं, जब तक पिञ्जर सास ॥७॥

चौपाई छन्द

कवल वचन वां कांठा किया, तब तो मालिक हुक्म दिया।
ऊँच नीच का एक निकास, कहां आचार मध्यम में बास ॥८॥
भग परां से बाहिर पड़्यो, नखचख रोम मेला से भरियो।
जन्मया पूत बजाया थाल, खिल खिल हंसे देखे बाल ॥९॥

चामर छन्द

दाई मल तो धोवे, श्रवण फूंक दी रोवे।
नाड़ा छुरी से काट्या, उदक में जाप कर दाट्या ॥१०॥
अब घर सूतक तो भया, उत्तम घर में नाहिं गया।
अब दिन पांच तो आया, बाहिर बालक को लाया ॥११॥
सूरज पूजियो भारी, लज्या राखी हरी म्हारी।
टीको काजल तो आँज्या, आटी चोटला बांध्या ॥१२॥
जोसी राज तो लाया, उस का नाम धरवाया।
हांती बांटे घरघर नार, नाइन बांधे वानर माल ॥१३॥
सईयां मंगल तो गावे, तुरियां ढोल घिरणावे।
पिता उत्सव तो कीन्हा, सब का नेग तो दीन्हा ॥१४॥
गीगो गोद में ध्यावे, जरणी लाड तो लड़ावे।
जननी कहत जन्मया जोध, मनमें थाय बैठी मोद ॥१५॥
पिता कहत बेटा खूब, नख चख बणियो है स्वरूप।
भाई देखे मन में खांत, आधो धन मैं देस्यां बांट ॥१६॥
बहनड़ कहत दोवड़ वीर, नख चख भेस लावे चीर।
सुण भूआ भतीजा की बात, झुगो टोपी लावे साथ ॥१७॥
दादी पोतरो हुलराय, दादा अवधि बीती जाय।
नव दस मास का बेटा, डगमग धरण पर बैठा ॥१८॥
बोली तोतरी बोले, चलतां आत्मा डोले।
झिर मिर चाल तो चाले, बालो धुन में माले ॥१९॥

चाले अन्न के लागा, उधर भरम सब भागा।
सगां बात पण पूछी, माता बोदरी टूठी ॥२०॥
इस की सगाई की बात, फेरा लिख्या जिण रात।
बरस सात में भया, दूदा दन्त पड़ गया ॥२१॥
बालों संग खेलण की मन में, गैंद ले खेलण जावमें।
वरस द्वादस को मोटा, देवे गैंद के दोटा ॥२२॥

दोहा छन्द

वर्ष द्वादस पाय के, पड़ियो कर्म में जीव।
जन "ईसर" वा बातड़ी, मूढ़ भूल गयो पीव ॥२३॥
कवल वचन काठा किया, यहां भूल गयो आय।
जन "ईसर" उस पीव को, कहा कहेगो जाय ॥२४॥

चामर छन्द

अठ द्रष्ठ तैरहवीं लागी, सुरत फिरत है भागी।
चौदह पांव नहीं टेके, मुखड़ों काच में देखे ॥२४॥
सौलह चलत है बंका, कछु नहीं बाप का शंका।
बीसां जोर को परखे, अब नहीं राम से डरपे ॥२६॥
पच्चीसां जोभन में थायो, इन्तर फूल लपटायो।
पिता पुत्र को परणायो, लाडी परण घर लायो ॥२७॥
निशिदिन अंग को धोवे, औरत सामने जोवे।
टेढा नैन नो फैंके, नख चख रूप तो देखे ॥२८॥

निरमल बैण तो बोल्या, सैजां ढालियां ढोल्या।
अब तो नाम लागे जहर, कर्मी करे नित दी कहर ॥२९॥
रीझ करे मुख से बात, जागरन बीती सारी रात।
वरष तीस यूं गया, मुख से राम नहीं कह्या ॥३०॥
प्रभू भज्यो नहीं करतार, पड्यो जीव मोहा जार।
वरष चालीस यूं खोया, टाबर टींगरा रोया ॥३१॥
रोटी देवे ना बाबा, नहीं तो करूंगा हाबा।
मन में सोच तो भया, दूणा काम तो किया ॥३२॥
वृद्ध भया है शरीर, लागा गृह का बहुत तीर।
पचासों पलट गया काला, कर में पकड़ली माला ॥३३॥
मुख से कहे तो हरला, मुक्ति जीव का भला।
झूँठी करत है सला, चीज बिन हाथ है खला ॥३४॥
थकियो जोजरी जरड़ाय, श्रद्धा बिन रह बरड़ाय।
गोडा धूजत है घांटी, कुटुम्ब पर किड़किड़ी बाटी ॥३५॥
खाँसी चलत बांधी धांस, साठां पकड़ बैटो मांच।
सितरां दरद पिण्ड छायों, जैसे उदैयी ढीर खायो ॥३६॥
अब तेरा आयगा वादा, लाडू खाय ना दादा।
अस्सियां छूटीकुटुम्ब आस, घुरड़का लेवे ओछासास ॥३७॥
कुटुम्ब धन को पूछे, नैना चौसरा छूटे।
बेटा पुण्य तो किया, पेट्या पूलिया दिया ॥३८॥

कर संतोष तो लिया, नीचे धरणी पर किया।
काल सिंह देत है फेरा, जमड़ा रोकिया सेरा ॥३९॥
जमड़ा मारदी जूती, जीव आत्मा छूटी।
कुटुम्ब सब करत है कूको, जीवड़ों कहां लग पूगो ॥४०॥
चार भाई मिल आतमा तोखी, जंगल बार ठंटोखी।
अनआतम जाल के आया, सरवर जाय के न्हाया ॥४१॥
कुल संसार की है लाज, कर्तव्य कीया सारा काज।
जमड़ा जीव को पकड्या, डण्डा मारके तकड़्या ॥४२॥
दरगाह पकड़ के लेगा, धर्मीराय ले लेखा।
वहां तुम जाय क्या किया, मुख से राम नहीं लिया ॥४३॥
अब तो गुटरड़का खावे, वहां तो जाब नहीं आवे।
यम को सोंप तो दिया, इस का जापता किया ॥४४॥
जमड़ा मार दिवी सोट, करमी फोड़ नाक्या भोट।
अब तो मिल्या झालोझाल, दीना लाल थम्भा बाल ॥४५॥
अब तो प्राण दुःख पावे, भभक तोड़ तो खावे।
हृदय नाम नहीं धरतो, यूँ भल नारकी पड़तो ॥४६॥
लेग्या नारकी के मायार, पंच्छी टूँचे करे कुंर्रार।
भोगे नरककुण्ड की आस, मूढ बाधो यम की फांस ॥४७॥

दोहा छन्द

नर्क कुण्ड भुगताय के, धर्मी लियो बुलाय।
राम नाम तूँ जन सजे, अब चौरासी जाय ॥४८॥

चेतया चौरासी टाल गया, समझ समझ सामरथ।
जन "ईसर" हर बन्दगी, करियो जीव को गथ ॥४९॥
"ईसर" गर्भ चेतावनी, कही जो सत बणाय।
हृदय राखे राम को सहज अमरापुर जाय ॥५०॥
अमरापुर में जायके, पावे पद निरवान।
जन "ईसर" हरि भक्त का, सत लोक स्थान ॥५१॥
बरस* छतीसो फाल्गुन, वदि अष्टमी जाण।
संवत् उगणीसो "ईसरा", गुरु गम पाय पिछाण ॥५२॥

उपदेश अंग (५) झूलना छन्द

कोई ज्ञान से गावे, कोई ध्यान से गावे,
कोई वैराग्य से राम लडावते जी।
कोई पेट के काज कोई भेट के काज,
कोई दहक कामणी रिझावते जी॥
कोई जीव के काज कोई पीव के काज,
कोई जनम रू मरण मिटावते जी।
"ईसरराम" फकीर परब्रह्म को चीन्ह के,
आप में आप मिलावते जी ॥१॥
कोई मौन रखे कोई धुनी धुखे,
कोई कन्द के भोज लगावते जी।
कोई सूल भगे कोई ऊँधा टंगे,
कोई ऊभा ही देह सुखावते जी॥

* वि.सं. १९३६ फाल्गुन वदि

कोई बाज करे सिर राख धरे,
यूँ ठगा ठगी से खावते जी॥
कह "ईसरराम" निज नाम ततसार है,
कछु पाखण्ड में क्या पावते जी ॥२॥

सुन सुन बे यार नादान पठे उमर घटे,
मग जाय मरोड़ में चालते जी।
तन धन जोभन दिन दोय को चान्दणो,
अन्त अग्नि में जालते जी॥
सांई तो माहि विचार के पकड़,
दम पल पल में प्रलय जावते जी।
झूँठ कपट को छोड़ प्यारे,
"ईसरराम" फकीर निकालते जी ॥३॥

बोल मन तोते पीञ्जरे बैठके,
कभी के ही खर्च खुलावते जी।
धाम ही धूम में जहान सब जात है,
आन मञ्जारी झपटावते जी ॥
सांई का नाम झटपट में पढ़,
रसना बिच राम का गुण गावते जी।
कह "ईसरराम" ये बोल का मोल है,
बोल बिन मोल नहीं पावते जी ॥४॥

तन दरगह में मन पीर जादा रू,
कछु रहत के रोजे राखतेजी।
अकथ कुरान को सांच कर बांचो,
यह झूँठ निकाल सत भाखतेजी ॥
राम रहीम तो एक ही सार है,
दुर्मति में दोय दिखावते जी।
"ईसरराम" फकीर बिचार किया,
दोई दीन के झगड़े भांगते जी ॥५॥
विषय त्याग किया वैराग भया,
जब जोग की जुगति पावते जी।
शम दम विचार रहत कर यार,
तन मन को नाहि डिगावते जी।
पांचो ही भोजन राब बराबर,
एक ही भाव कर पावते जी।
यही तो हॉल फकीर का ईश्वर,
मकटे चुबे चुबावते है जी ॥६॥
भरम ही भाकसी धोड़ मन मारे,
कछु जीव के बन्ध छुड़ावतेजी।
गुरु गम का बाण हृदय में लागिया,
चेत अचेत चेतावतेजी॥

महुला महल की सैल करो,
दिन दोय के ढोल बजावते जी।
"ईसरराम" फकीर डकर किया,
यमदूत तो दूर भगावते जी ॥७॥

ढाबरे ढाब मन टोड को ढाब,
निज नाम की मार लगावते जी।
लिव लगाम खैंच मजबुत से,
शुद्ध कर राह चलावते जी ॥
अर्ध रू उर्ध बिच लग घमसान है,
गुरु गम की तोप दगावते जी।
"ईसरराम" फकीर गांव जब पावते,
मोह का मोरचा ढावते जी ॥८॥

कोई नाथ कहै कोई अनाथ कहे,
कोई आदि पुरुष को ध्यावते जी।
कोई जाप कहै कोई अजाप कहै,
कोई रणुकार को रटावते जी॥
कोई निर्गुण कहै कोई सगुण कहै,
कोई आर्यसमाज ठहरावते जी।
"ईसरराम" फकीर अविगत तो दूर है,
ताहि बोल नहीं लगावते जी ॥९॥

कोई आर कहै कोई पार कहै,
कोई अणघट पीर मनावते जी।
कोई ओम कहै कोई सोहं कहै,
कोई सोहं सत मिलावते जी ॥
कोई ईसा कहै कोई मूसा कहै,
कोई जैन इष्ट बतावते जी।
"ईसरराम" फकीर सत नाम तो एक है,
अनेक गपोंड़ा क्यों बतावतेजी ॥१०॥

कोई राम कहै कोई रहीम कहै,
कोई परवदिगार को ध्यावते जी।
कोई अल्लाह कहै कोई खुदा कहै,
कोई अलख शब्द को गावतेजी॥
कोई वेद कहै कोई कतेब कहै,
कोई अनेक गपोड़ बतावते जी।
"ईसरराम" फकीर अक्षय देश की मौज,
कोई सन्त दिवाना ही पावतेजी ॥११॥

नाम अनामी की गम नहीं,
बिन जाने ही गोता खावते जी।
तन ही खेत में कपट का सूड कर,
भ्रम के मूल को पाड़ते जी॥

धुन के बैल सुध बहत है ध्यान में,
स्वास का ऊमरा काढ़ते जी॥
बीज तब निज नाम के बाविये,
ढोर अज्ञान को ताड़ते जी।
कर्म ही कीट कूचो मिलग्यो खेत में,
''ईसर'' पांच पुरुष निनाणते जी ॥१२॥
त्रिकुटी डांयचे बैठ सुरत रूखाली,
सोहं को पूँकड़ा मोरते जी।
ज्ञान का गोफ्यो मार कुब्द काबरियो,
सूना जो खेत उजाड़ते जी ॥
तन गुरु सत पाय के साहब,
सागर सुख मनावते जी।
कह ''ईसरराम'' किस्मत का पायबा,
प्रारब्ध से नाम साज पावते जी ॥१३॥

मनोहर छन्द

मन पशु बण बैठो, मन ही पुरुष नार।
मन ही तो पग तले, मन ही सवार है॥
मन ही तो सोटा फेंके, मन ही तो खावे मार,
मन ही अपार पार, मन सर्वाधार है॥
घुड़ला में दीप दीखे, बाहर प्रकाशवान
प्राणी में तो चिलकते, सूरज आकार है।

नौबत के एक डंके, अनन्त घर बाज जोय,
कहत "ईसरराम", यूँ व्यापक अपार है ॥१४॥
केता ही तीरथ न्हाय, केता ही जो आन ध्याय,
मन्दिर मस्जिद नित, धूप घी गरत है।
केता ही जो गाय देखो, केता ही बजाय देखो,
आतमा की ठाम वाको, नाहि जो परत है ॥
केता ही स्थान खोजे, शंखनाल बंक जोड़ो।
त्रिकुटी सोहम् घर, ध्यान जो धरत है ॥
कहत "ईसरराम", आतमा की जाण बिना।
काम न सरेगो कछु, भूला जो फिरत है ॥१५॥
कई जप तप करे, करणी करतूत करे,
अजपा का श्वासा कोई, ध्यान को धरत है।
भावे वेद खोजो देखो, भावे अर्थ खोल देखो,
कई अनुभव वाणी, ग्रन्थ को करत है॥
केतो ही तो ज्ञान करे, केतो ही जो ध्यान धरे,
आत्मा परतीत बिना, काज ना सरत है।
कहत "ईसरराम", अक्षय पद बिना सब,
थिर नहीं रञ्छ धार, झूँठा ही परत है ॥१६॥

छप्पय छन्द

गुरु दीया की लोय, गुरु दर्पण को भलको।
गुरु समुन्द शिष्य तरंग, एक रंग चाले झलको ॥

गुरु इञ्जन को बेग, आप को पार लँघावे।
गुरु भृंग ज्यूँ लाग, कीट को रंग पलटावे ॥
आप स्वरूप बनाविया, रणंकार धुन से बन्यो।
जन "ईसर" गुरु सम और न, कहूँ देख्यो सुन्यो ॥१७॥

जल बिच छिपेना सांच, पावक बिच छिपे न शोरा।
ज्योति छिपे ना सूर, कंकर हीर छिपे ना धोरा॥
शीतल छिपे ना तेज, पीतल छिपे ना सोला।
सावंत छिपे ना राड़, चतुर छिपे ना भोला॥
कोआ छिपे ना कोयल, बगुला छिपे ना हंस।
जन "ईसर" गुरु गम नहीं छिपे,
यूँ जगत छिपे नहीं सन्त ॥१८॥

रेखता पद

रामहीराम घटघट में बोलत, रामहीराम बनरायछायो।
धरण रू गगन बिच राम ही राम है,
राम ही राम पाषाण पायो ॥
अनन्त कोट संत राम ही कहत है,
शेष ही नाम कर राम ध्यायो।
"ईसरराम" फकीर या जग में राम है,
श्वास उश्वास संत राम गायो ॥१९॥

सहाय करी गुरुदेव या जीवकी, डूबत सिंधू सेतारलियोहै।
आप का रूप स्वरूप मिलाय के, सच्चिदानन्द सो साच दियो है॥
रटत हरि को प्रकट घट घट में, यूँ गुरुपूरणब्रह्मकह्योहै।
"ईसरराम" कहै कर जोरजु, गुरु सुखराम नमाम सयोहै ॥२०॥
गुरु शब्द दिया आनन्द भया, जब भूलमिटीहैयामनकी।
निज मनभये आपहिमेंआपो, दिष्ट फिरीहै सब तनकी॥
वो मन नहीं वो तन नहीं, ये सैन निरन्तर सनमन की।
"ईसरराम" कहै करजोरजु, मस्त फकीरी निर्बन्धनकी ॥२१॥
केता कहत है रति न बहत है, हूँ तूँ हूँ तूँ ज्ञान गहैठा है।
वाद विवाद अविद्या तज, गुरु ज्ञान गहो तजखेटा है॥
विकट वैराग लिया संग सागे, तब ब्रह्म देश में पैठा है।
"ईसरराम" लख्या सतआतम, निर्भय निश्चल हो बैठा है ॥२२॥

मुलकावलि-संकेतार्थ भाव का अंग (६)

नित खड़ी[१] अजमेर, जोबनेर[२] जाण्यो नहीं।
पाली[३] रहा परिवार, मेड़तो[४] मिल्यो नहीं ॥१॥
रेण[५] में एक रात, कहा खाटू[६] बिन खायगो।
कुचेरा[७] दिन चार, अन्त नागीणे[८] जायगो ॥२॥
माण्डलग़ढ[९] में आय के, भूल मत[१०] शाहपुर।
आगरे[११] को जाणा है, तू दिल्ली[१२] को याद कर ॥३॥

टिप्पणी : १. मृत्यु, २. जवानी, ३. पालन, ४. माया, ५. रहना, ६. खटने का लाभ, ७. कूच करना है, ८. नंगा ही, ९. माया नगर, १०. शाह-भगवान, ११. आगे, १२. दिल से

[१]कालूपुर पाछेरह आय पहुंची [२]धोलपुर, लाकड़ी का थान है।
[३]चितौड़ विचार रे बावरा मन, [४]इकलिङ्ग को जाना है ॥४॥
कोटे[५] से आया, किशनगढ़[६] जायगा।
बूँदी[७] में जाण ले, फतहपुर[८] पायगा ॥५॥
डेह[९] भदाणो[१०] सोमणा[११] चाहू ऊँचा वास।
[१२]सलाऊ में निगह करो, तो [१३]अमरापुर में वास ॥६॥
रामपुरा[१४] को याद कर, जोधपुर[१५] में चेतरे।
[१६]कलकता को मार हटादे, [१७]जयपुर की फेट रे ॥७॥
[१८]मुम्बई शिर आन खड़ी है, सुरत[१९] दक्षिण देशरे।
[२०]अमरपुरा की मौज ईसरा, पाई सुख में सेजरे ॥८॥

मिश्रित अंग-कुण्डलिया छन्द का अंग (८)

सुखराम सुखसागर भरिया, ईसरराम शिष्य सीप।
जीयाराम जल बरषिया, मोती निपज्या दीप॥
मोती निपज्या दीप, हरि इन्द्र ज्यूँ गाजे।
बिजली बनानाथ, भलाको चहूँ दिशि छाजे॥
उमारामजी कड़किया, हुआ सचन्दन दीप।
सुखराम सुखसागर भरिया, ईसरराम शिष्य सीप ॥१॥
शम दम थिर होय बैठज्यो, गुरु संतन की छाय।
सता स्वरूपी आप है, दूजा दीखत नाय ॥

टिप्पणी : १. काल, २. सफेदी, ३. चेतजा, ४. अकेला, ५. कहां से, ६. कहां को, ७. थोड़े में, ८. विजय, ९. देह, १०. भय, ११. संकल्प, १२. सलाह, १३. अभयपद, १४. रामजी को, १५. जवानी में, १६. काम-काल क्रोध, १७. जम, १८. मौत, १९. सावधान, २०. अमरपद।

दूजा दीखत नाय, आप में आप हि बोले।
डोलत नहीं अडोल, समझ कर ताकूँ जोले॥
''ईसर'' ईश्वर जाणिये, ''सुखराम'' सुखमाय।
शम दम थिर होय बैठज्यो, गुरु सन्तन की छाय ॥२॥
गुरु मिल्या ''सुखराम'', सैन मोहि दीनी सांची।
''ईसर'' लखली जाण, जीव की मेटी रांची॥
जीव की मेटी रांची, त्रिकुटी डोर लगाई।
जब लग भयो उजास, ज्योति के दर्शन पाई ॥
वहां तो दीपक तेल, पावक जले ना बाती।
गुरु मिल्या ''सुखराम'', सैन मोहि सुरता पाती ॥३॥
''ईसर'' झोली आदि की, लीजो जोय संभार।
नाम पदारथ परखिये, मति लगाओ वार ॥
मति लगाओ वार, बिणज की बेल्या जावे।
पलक पलक का भाव, रतन का मोल गमावे॥
माणक कांटे जांचिये, निकसे भ्रम की तार।
ईसर झोली आदि की, लीजे जोय संभार ॥४॥
काम क्रोध मोह लोभ रू, दुष्ट लफंगा चार।
आसा तृष्णा कलह कल्पना, इस रण्डियों का यार॥
इस रण्डियों का यार, भजन को धारे नाही।
दोनों वाद विवाद, अज्ञानी बैठा मांही॥

जन "ईसर" निज नामसे, किस विध बन्धे प्यार।
काम क्रोध मोह लोभ रू, दुष्ट लफंगा चार ॥५॥
जत मत शील सन्तोष रू, शब्द ले उर में धार।
गोला ज्ञान का बाय के, दुष्ट को प्रथम मार॥
दुष्ट को प्रथम मार, विवेक ते वाद अज्ञाना।
अर्ध उर्ध के बीच में, ले सतगुरु का ज्ञाना॥
ले सतगुरु का ज्ञानजी, "ईसर" घट उजार।
जत मत शील सन्तोष रू, शब्द ले उर में धार ॥६॥

मन कुत्तों मन ढोर है, मन है बड़ो चण्डार।
मन झूँठा मन अप्रबल, किस विध उतरे पार ॥
किस विध उत्तरे पार, विषय में भागो जावे।
बिन समझ्यां यो मूंढ, पीछो कबहूँ ना आवे ॥
जन "ईसर" या मन को, दे स्मरण की मार।
मन कुत्तो मन ढोर है, मन है बड़ो चण्डार ॥७॥

मन मिलावे ब्रह्म को, मन ही करे फजीत।
जो मन साधू शूरमा, तन मन लीना जीत॥
तन मन लीना जीत, फोरणा कबहू न ऊटे।
चित चेतन के मांहि, नाक का हीरा लूटे॥
जन "ईसर" गुरु सेन से, भेट्या ब्रह्म अजीत।
मन मिलावे ब्रह्म को, मन ही करे फजीत ॥८॥

भूल भूतनी काढ़ दूं, कोई आय हमारे पास।
माला दूँ सत शब्द की, फेरो स्वास उश्वास॥
फेरो स्वास उस्वास, कर्मों का काँटू जाला।
भवसिन्धु कर पार, घट में करूँ उजाला॥
परम पद में पहुँचाय दूँ, कहता "ईसरदास"।
भूल भूतनी काढ़ दूँ, कोई आय हमारे पास ॥९॥

भोपा डोपा ना समझता, सत पुरुषों की सेन।
अर्थ ग्रन्थ की गम नहीं, खाली ठीकरो ऐन॥
खाली ठीकरो ऐन, शब्द की सार न जाणी।
भैरूँ भूत मनाय, सन्तों की निन्दा ठाणी ॥
मुढ़ मूरख जाणया नहीं, "ईसर" फकर का बेन।
भोपा डोपा ना समझता, सत पुरुषों की सेन ॥१०॥

अजया गज का "ईसरा", किस बराबर खोड़।
ऊँठ मीन कुड़क चिऊण्टीयाँ, नहीं तुलत है हौड़॥
नहीं तुलत है हौड़, रहत है वांकी न्यारी।
आप आप की मौज, आप को लागे प्यारी ॥
कोयल रीझी बाग से, भिष्टे राजी डौड।
अजया गज का ईसरा, किसा बराबर खोड़ ॥११॥

जन "ईसर" निज नाम से, हो गये अदल फकीर।
विरह दबे नहीं बावरी, लग्या पुरव का सीर ॥

लग्या पूरव का सीर, नाम की महिमा भारी।
निर्भय भया वैराग, जगत की मिथ्या खारी॥
सतगुरु तो पूरा मिल्या, लगा शब्द का तीर।
जन "ईसर" निज नाम से, हो गये अदल फकीर ॥१२॥

काल डरे निज नाम से, टले यमों की चोट।
करम कीट सब भागिया, दीयो भ्रम को दोट ॥
दीयो भ्रम को दोट, सिंधु के बाहर आया।
गुरु गम ज्ञान विचार के, अगम घर इस विध पाया॥
जन "ईसर" धन भाग है, खुदा ही खबर करन्दा।
टले यमों की चोट, नाम से काल डरन्दा ॥१३॥

नाम अगनि तन धूणि में, विरलां दिवी जगाय।
"ईसर" जो जन तापिया, गुरु गम फूँक लगाय॥
गुरु गम फूँक लगाय, जीव का शीत उडाया।
चेतन चिलम्या चाढ़, शब्द का हुक्का पाया ॥
स्वास उश्वासां खैंचिया, हर से चित लगाय।
नाम अगनि तन धूणि में, विरलां दिवी लगाय ॥१४॥

हौंठ जीभ से राम कह, रसना कहै अलख।
ओम् सोहं के है परे, ईसर वाकों लख ॥
"ईसर" वाको लख, चेतन का सभी पसारा।
निराकार निरधार, अखै घर अगम अपारा॥

"सुखराम" गुरु जोगिया, सैन दिवी निरपख।
होंठ जीभ से राम कह, रसना कहै अलख ॥१५॥
कह "ईसर" संसार में, सब से बत्ती भूख।
जहां मिले तहां पायले, छाया धूल न दूख।
छाया गिणे न दूख, राण्ड कुत्ती से हारा॥
दियो चांदको डाल, पीछे सब कारज सारा।
अन्न पाणी का इश्क है, या बिन जावे सूख॥
कह "ईसर" संसार में, सब से बत्ती भूख ॥१६॥
राम नाम निरवान है, त्यागो सर्व जंजाल।
"ईसर" लिव लागी रहै, ज्यूँ अरहट में माल॥
ज्यूं अरहट में माल, जभी फिरने में आवे।
होवे आनन्द उच्छाव, सत घर बैठां पावे॥
आठ पहर जरणा जरे, कबहुं न पड़ता काल।
राम नाम निरवान है, त्यागो सब जंजाल ॥१७॥
जहाँ कबीर को ढोलियो, तहां "ईसर" का मांच।
जलती अग्नि में कूदता, तहूँ न लागे आंच ॥
तहूँ न लगे आंच, सत करणी के कारणे।
जन "ईसर" जा पहुंचिया, सन्त कबीर के बारणे॥
आछी करी है "ईसरा", सांचा खोज चलाय।
कबीर सूता नींद में, फक्कड़ दिया जगाय ॥१८॥

इति श्री स्वामी ईसररामजी महाराज कृत अनुभव वाणी समाप्त

श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः

श्री पूसाराम भजन विलास

श्री स्वामी पूसारामजी महाराज कृत अनुभव वाणी

भजन (१) राग देश पद

सखी बिछड़्योड़ा पीव मिलाया ए ।।टेर।।
सत की संगत में मेरा पिया मिलाया,
म्हाने भिन्न भिन्न कर समझाया ए ।।१।।
सत की संगत आ कल्पवृक्ष है,
म्हांने इच्छा फल बकसाया ए।।२।।
सत की संगत आ अड़सठ तीर्थ,
मैं तो घर बैठा ही गंगा नहाया ए ।।३।।
सत की संगत आ मान सरोवर,
म्हाने निज मोती चुगवाया ए ।।४।।
सत की संगत आ चन्दन स्वरूपी,
म्हाने तरूवर सुगन्ध फुलाया ए ।।५।।
"ईसरराम" गुरु पारस भेटिया,
म्हाने लोहा कंचन करवाया ए ।।६।।
"पूसाराम" सतसंग की महिमा,
ये तो अगम निगम सत गाया ए ।।७।।

भजन (२) राग देश, बधावा पद

करस्यां गुरु जी को सागो रे,
म्हारो हृदय माहि से जागोरे ।।टेर।।
सतगुरु मिल्या परमसुख पावे।
म्हारो चित रामैया में लागो रे ।।१।।
जल बिन जीव बहुत दुःख पावे,
शील सन्तोष बिन ठागो रे ।।२।।
दोय हजार जिभ्या वासंग सिमरे।
अन्त नहीं आयो वाको रे ।।३।।
मेरे पिंजरिये में एक ही जिभ्या।
म्हारो अब लागे कांई थागो रे ।।४।।
"ईसरराम" गुरु दियो म्हाने झालोरे।
"पूसाराम" जाग उठ भागो रे ।।५।।

भजन (३) राग लावणी पद

गुरु सरीखा देव, म्हारे मन भावे,
काटे कर्मों का जाल, परम पद पावे ।।टेर।।
देख जगत का ख्याल, मती मन लावे,
अन्तकाल के माहि, पीछे पछुतावे ।।१।।
सत शब्द की सार, कोई जन चावे,
लगी ज्ञान की चोट, हरिगुण गावे ।।२।।

सुखसागर के माहि, समझ कर न्हावे,
अर्ध उर्ध के बीच, चाल में आवे ॥३॥
इडा पिङ्गला फेर, सुषमणा लावे,
ऐसा दीन दयाल, पवन उलटावे ॥४॥
आई गुरु की सैन, सांच कर ध्यावे,
सत चेतन के माहि, सुरत रम जावे ॥५॥
अखै अखण्डी राम, चराचर थावे,
ब्रह्म सकल के माहि, वेद यों गावे ॥६॥
"ईसरराम" गुरुदेव, भ्रम ने ढावे,
सत "पूसाराम" वो जीव, आवे नहीं जावे ॥७॥

भजन (४) राग लाणी पद

सिरजणहार भज्यां बिन, मूर्ख चौरासी पाता ॥टेर॥
बहुत दुर्लभ से पायो मनुषो, धन है विधाता।
नौ मास तो रह्यो गर्भ में, संकट सह्यो माता ॥१॥
धन जोभन की करे बड़ाई, झूँठी बात चलाता।
मुख से राम कह्यो नहीं पापी, आनदेव ध्याता ॥२॥
विषय रस में बहुत राचियो, काम क्रोध स्याता।
गुरु को ज्ञान गह्यो नहीं हृदय, जावे धूड़ खाता ॥३॥
जम की मार पड़े शिर ऊपर, हाय हाय करता।
अन्तर्यामी लेखो मांगसी, उत्तर नहीं आता ॥४॥

चार खानि में लख चौरासी, नाना योनि धराता।
गंडक गण्डूरा होसी कागला, गधः योनि पाता ॥५॥
''ईसरराम'' मिल्या बड़भागी, छोड़ जगत नाता।
''पूसाराम'' सुमर साहब को, सुखसागर न्हाता ॥६॥

भजन (५) राग लावणी पद

जगत जाल को छोड़ परेरा, मुक्ति पद पाई ।टेर॥
मन की लहर त्याग करोंरे, संगत सार समाई।
लख चौरासी, टाल्यो चाहै, गुरु को शीश नमाई ॥१॥
दिल कर पाक सुमरो मुसाफिर, गोविन्द का गुणगाई।
अभिमान को दूर हटाओ, जत मत ले भाई ॥२॥
निज पीधा प्याला हो मतवाला, उनमुन में लिवलाई।
आठों पहर सहज धुन लागी, प्रेम नीर नहाई ॥३॥
शुन्य शिखर घर ताली लागी, सतगुरु सैन बताई।
लहर महर से पायो महोलो, साहब में थिर थाई ॥४॥
''ईसरराम'' गुरु समझावे, भक्ति साच कमाई।
''पूसाराम'' शब्द ज्यों नौका, बैठ पार लंघ भाई ॥५॥

भजन (६) राग देश पद

आवे अवलेका गुरुदेव का, कहां ढूंढू में जायरे।
बूँद समुद्र में मिल गई, कौन कहै अब आय रे ।टेर॥
आया सन्देशा परलोक का, मन में कोई दुसार।
मिलने का संशय भया, झुर रह्या नैन अपार ॥१॥

भिन्न भिन्न कर समझावता, देता शब्द की मार।
अमृत वाणी बोलता, देता ज्ञान विचार ॥२॥
घटा शूनी बिन दामनी, पति बिन सूनी नार।
संगत सूनी गुरुदेव बिन, पलक न टूटे तार ॥३॥
दास "पूसाराम" की वीनती, जनम जनम को लार।
आप स्वरूप में मिल गया, म्हारा आत्म का आधार ॥४॥

भजन (७) लावणी पद

मान मती कर अभिमान, काल को है चारो।
राव रंक बह्यो जाय, भजन कर थारो ॥टेर॥
आ काया माया है झूँठ, सांच मत धारो।
नख चख भर्‌या भंगार, रक्त को है सारो ॥१॥
सभी द्वार विकार, पवन को दियो सारो।
हाड मांस को कोट, चाम को है गारो ॥२॥
धन जोभन परिवार, पूत नहीं है थारो।
सतगुरु शरणे जाय, होय भव पारो ॥३॥
राम नाम निज हीर, धन्य है ओ वारो।
खरच्यां खूटे नाहि, भजो सिरजण हारो ॥४॥
"ईसरराम" गुरुदेव, दया कर तारो।
सत "पूसाराम" आधीन, दास हूँ थारो ॥५॥

भजन (८) राग टूमरी पद

ऐसा निज ध्यानी साधो, अन्दर में लिव लावो।
अन्दर में लिव लावो, शुन में तार लगावो ।।टेर।।
काम क्रोध उर ममता मारो, पीछे हर घर आवो।
विषय वासना चित मत धारो, सूता पीव जगावो ।।१।।
सोहं शब्द ले सुमिरण साधो, पांच पचीसो गावो।
अर्ध उर्ध बिच डोर लगाओ, हंसां को हीर चुगावो ।।२।।
इडा पिंगला को गम कर खोजो, सुषुमन के घर लावो।
तट त्रिवेणी ज्योति जगत है, जिस का दर्शन पावो ।।३।।
शुन शिषर में रास रच्यो है, कर बिन बीण बजावो।
अंधा बहरा बहुत सराया, निज मन जाय रिझावो ।।४।।
"ईसरराम" मिले गुरु पूरा, कृपा से पीव पावो।
"पूसाराम" दमोदम सिमरो, अविचल में थिर थावो ।।५।।

भजन (९) राग सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! विरला उत्तरे पार।
त्रिगुण माया शूरा संत जीते, लगे न जम की मार ।।टेर।।
हर्ष शोक दुःख सुख सब त्याग्या, त्यागी कल्पना नार।
जत मत दोनूं गाढा कर पकड्या, हरदम लागी तार ।।१।।
ज्ञान भानु घट भीतर ऊगा, भागा भ्रम अन्धार।
उड़गण चांद सभी विलाया, रजनी नहीं लिगार ।।२।।

पाई सार, मार जब लागी, लागो शब्द अपार।
कर्ता छोड़ अकर्ता हेर्यो, निकलंक भेंट दरबार ॥३॥
निरमल स्वामी सभी में शामिल, नाम न रूप अकार।
अपरम्पार थाग नहीं उनको, निरालम्ब निराधार ॥४॥
"ईसरराम" गुरु समर्थ, मिलिया, लिवी फकीरी धार।
"पूसाराम" सांच कर पकड़ी, पाई बेगम सार ॥५॥

भजन (१०) राग लोय पद

शीत लगे नहीं वाणी ऐ लोय।
आतो गूँगे ही अथंग परसाणी ए लोय ।टेर॥
अविचल ब्रह्म चल में सब माया,
मैं तो चेतन प्रेरक जाणी ए लोय ॥१॥
आकाश वायु अरू तेज भी नाही,
वो तो नहीं पृथ्वी अरू पाणी ए लोय ॥२॥
नाम रूप आतम में नाहि,
वो तो सर्वज्ञ अखण्ड गरकाणी ए लोय ॥३॥
मुनि वक्ता श्रोता कछु नाहि,
वो तो नहीं लाभ नहीं हाणी ए लोय ॥४॥
नभ ज्यूँ व्यापक अन्दर बाहिर,
वो तो अपने आप लखाणी ए लोय ॥५॥
"ईसरराम" अखय अजाती,
वो तो समुन्द्र लहर समाणी ए लोय ॥६॥

कहै "पूसाराम" कहूँ अब कैसे,
वो तो अदली पुरुष पुराणी ए लोय ॥७॥

भजन (११) राग मंगल, प्यारी पद

प्यारी ऐं! बांझ नारके पास, पुत्र कहां पावना।
सतगुरु ज्ञान सुजान, जहाँ ढिग जावना ॥१॥
ऐसा निरबन्धन जोय, गुरु चित लावना।
पारस भेट्या आप, लोहा पलटावना ॥२॥
लोहा कंचन होय, मोल चढ़ जावना।
भया रंक का राव, सदा थिर थावना ॥३॥
गुरु का नैन बैन सो, अंग सुहावना।
राम कृष्ण अवतार, गुरु गुण गावना ॥४॥
"ईसरराम" गुरुदेव, निज मन भावना।
कहै "पूसाराम", गुरू, चरण शरण समावना ॥५॥

भजन (१२) राग मंगल, अरिल्ल पद

प्यारी ए! ले विवेक वैराग, मोह रंग को छोडिये।
शम दम लीजे साज, विषय मन काडिये ॥१॥
होय विषय उपराम, मोक्ष के काज है।
काल जाल नहीं जाय, अचल को राज है ॥२॥
नहीं पुरुष नहीं नार, अलोकी खेल है।
नाम रूप कछु नाहि, अन्दर की सैल है ॥३॥

चेतन सकल प्रकाश, माप नहीं अमाप है।
मुख से कह्यो नहिं जाय, शब्द नहीं जाप है ॥४॥
नाही जात अजात, गूंगा की ज्यूं सार है।
नहीं लघू दीर्घ नहीं, आगे नहीं लार है ॥५॥
गुरु "ईसरराम" अजीत, जीत नहीं हार है।
कहै "पूसाराम", अक्षय अपार है ॥६॥

भजन (१३) राग आशावरी पद –

साधो भाई ! सेवा चार बताई।
तन मन धन वचन से मानो, अगम निगम संत गाई ॥टेर॥
पहली सेवा दण्डवत परिक्रमा, आतम से निज थाई।
आठों पहर हुक्म में हाजर, सुमता सहज मिलाई ॥१॥
दूजी सेवा गुरु अविनाशी, तिहूँ देव मन भाई।
सब तीर्थं में गुरु अधिकारी, गंगा चरण में न्हाई ॥२॥
घर धर सुत वित कनक कामनी, सब गुरु के अर्पाई।
ले वैराग विषय कंचली डारे, राग रति नहीं काई ॥३॥
चौथी सेवा गुरु के सम रहना, वचन लोप मत जाई।
साजन भोजन जल अरु पाणी, हुक्म विना मत पाई ॥४॥
"ईसरराम" गुरु सर्व प्रकाशी, आतम ज्ञान लखाई।
"पूसाराम" सेवा शिष्य कीजे, फेर जनम नहीं आई ॥५॥

भजन (१४) राग आशावरी पद

गुरुजी! कहाँ तक करूँ बखाना।
जड़ चेतन में समरथ स्वामी, एक अखंडी जाना।टेर॥
मुरशिद योगी शब्द सुणाया, हरमद तार लगाना।
भागा भ्रम पंथ पिव पाया, सतगुरु मिला सुजाना ॥१॥
सतकी सता सकल घट व्यापक, घटघट ज्योति जगाना।
दशों दिशा समझ कर जोया, निराधार निरवाना ॥२॥
बोध करंतो बुद्धि थकानी, मन का खोज विलाना।
पाला गल्या नाम सब खूटा, सायर नीर समाना ॥३॥
"ईसरराम" गुरु समझाया, ज्यों का त्यों ही पिछाना।
"पूसाराम" अमर अविनाशी, सत चित आनन्द रहाना ॥४॥

भजन (१५) राग आशावरी पद

साधो भाई ! हंसा करत विलासा।
आनन्द सायर में हंस विराजे, वास करे निज दासा ।टेर॥
कपटी बुगला भेद न जाणे, विषया रस का प्यासा।
आतम ज्ञानी निज हंस स्वरूपी, उनमुन रहत उदासा ॥१॥
सायर अथाग थाग नहीं पावे, हंसा लेत निवासा।
हंसों की गति हंसा जाने, मोती चुगत जिज्ञासा ॥२॥
आनन्द सायर में अनन्त संत रहिया, नीर खीर इकरासा।
मुख से बोल कह्या नहि जावे, ऐसा अजब तमासा ॥३॥
"ईसरराम" मिल्या गुरु पूरा, कीया द्वैत का नासा।
"पूसाराम" सत सायर मिलिया, जम की मिट गई त्रासा ॥४॥

भजन (१६) राग आशावरी पद

साधो भाई ! अविद्या भ्रम बंधाया।
नाम रूप चेतन में नाही, सदा रहत निरमाया ।टेर॥
सुस्या के सींग नभ नीलता, कल्पित रूप दिखाया।
मृगजल नीर स्वप्न में बंझ्या, बहुत कठिन सुत जाया ॥१॥
रज्जू में सर्प सीप में रूपा, मिथ्या सांच कर थाया।
ठूँठ में चोर दर्पण में बालक, मुख देख घबराया ॥२॥
ब्रह्म श्रोत्रिय सतगुरु भेट्या, ब्रह्मनिष्ठ समझाया।
आतमज्ञानी अखण्ड प्रकाशी, सारा भर्म विलाया ॥३॥
एक न दोय रञ्च नहीं जामे, उडगण जल निरदाया।
दृष्ट मुष्ट खुला नहीं बंधा, नहीं धूप नहीं छाया ॥४॥
"ईसरराम" गुरु केवल अनूपा, अभंग अछेद रहाया।
"पूसाराम" भ्रम भया नाशा, नहीं गया नहीं आया ॥५॥

भजन (१७) राग आशावरी पद

साधोभाई ! केवल ब्रह्म विचारा।
झीणी रेश कही नहिं जावे, ऐसा अलख अपारा ।टेर॥
आश्रम वर्ण चेतन में नाहि, नहीं कोई षट्विकारा।
आदि न अंत मध्य नहीं उन के, पांच रूप से न्यारा ॥१॥
हानी लाभ आतम में नाहिं, अगल बगल ना सहारा।
सांच झूँठ हिले ना चलता, गंगा यमुना नहीं धारा ॥२॥
शीत उष्ण जले नहीं डूबे, ज्यूं जल व्यापक तारा।
चेतन पेची पेच चलावे, रहे पेच से न्यारा ॥३॥

"ईसरराम" गुरु सेन बताई, नहीं कोई जीत न हारा।
"पूसाराम" निर्लेप गोसांई, नहीं जहां जगत व्यवहारा ॥४॥

भजन (१८) राग आशावरी पद

साधो भाई ! चेतन सब का जाणी।
रवि ज्यूं प्रकाश घटो घट व्यापक, गूँगा सेन पिछाणी ॥टेर॥
आकाश वायू में सो भी नाहि, नहीं कोई तेजो पाणी।
पृथ्वी माया, ब्रह्मण्ड नाहि, नहीं कोई चारो खाणी ॥१॥
तत्व पचीस तीन गुण नाहीं, ना सतरह ठहराणी।
अंत:करण चार अवस्था नाहि, नहीं कोई चारो वाणी ॥२॥
षट् विकार शरीर के नाहि, ऐसा अदल पुराणी।
चार सम्बन्ध कोश पंच नाही, नाम रूप की हाणी ॥३॥
सामान्य विशेष दोनोंकासाक्षी, अविचल अकथ कहाणी।
आतम अजय उत्तम नहीं मेला, लाभ हानी ना आणी ॥४॥
"ईसरराम" नितोनित केवल, "पूसाराम" सत माणी।
होय विशेष समान समाया, लखे कोई संत सुजाणी ॥५॥

भजन (१९) राग आशावरी पद

साधोभाई! आ विधि विरला जोई।
काम क्रोध लोभ नहीं माया, ऐसा समर्थ वोई ॥टेर॥
श्याम हरित रू लाल सफेदा, पीला नहीं है कोई।
कुष्ट पुष्ट डीगा नहीं टूका, गरक भरया निरमोई ॥१॥
उत्पति थिति प्रलय नहीं होवे, हाड मांस नहीं लोई।
पाणी पसारू मुष्ट नहीं आवे, नहीं लोय अलोई ॥२॥

बाल युवा वृद्ध नहीं जामे, नहीं बिछुड्या मिलवोई।
अनगिनती गिनती नहीं होवे, नहीं एक नहीं दोई ॥३॥
हार जीत काठा नहीं पोला, चंचल नहीं अडोई।
काचा पाका भरिया नहीं रीता, निरधना निरमोई॥४॥
"ईसरराम" गुरू पागी पाया, अद्‌भुत सेन पजोई।
"पूसाराम" गूंगा गुड़ जाण्या, संत वेद कह सोई ॥५॥

भजन (२०) राग आशावरी पद

साधो भाई ! चेतन शक्ति समाया।
दूध में घृत तिल में तेल ज्यूं, ऐसे व्यापक भाया ॥टेर॥
रज वीरज का अण्ड उपाया, अन्दर में बणवाया।
पांच भूत का पांच छिद्र है, करता की चतुराया ॥१॥
तीन गुण अरू तीन शरीरा, तीन अवस्था थाया।
तीन लोक अरु तीन जीव है, तीन देव की माया ॥२॥
चौदह लोक अरु चन्द सूरज है, अर्ध उर्ध कहलाया।
षट् उर्मी रु षट् विकार है, षट् नाम कर काया ॥३॥
पच्चीस तत्व स्वप्न का सतरा, चौवीस बंध लगाया।
दश इन्द्रियाँ हजारों नाड़ी, सब से भिन्न वह गाया ॥४॥
"ईसरराम" गुरु जुगति बताई, ब्रह्म कुलाल अचाया।
"पुसा" कारण कारज बणिया, अखण्ड अलोक अजाया ॥५॥

भजन (२१) राग आशावरी पद

साधो भाई ! अविगत भेद हमारा।
अविगत भेद लख्यो नहीं जावे, समझे हरिजन प्यारा ॥टेर॥

पांच पच्चीस नहीं जहां माया, नहीं त्रिगुण विस्तारा।
सतरा चौवीस स्वप्न का नाही, नहीं इन्द्रियन विकारा ॥१॥
पांच कोश कर्म नहीं पहुँचे, नहीं कोई गृह आधारा।
मन पवना दोनों थक जावे, अगम निगम से पारा ॥२॥
अटल धाम है नहीं जहां खटला, अटलही देव दीदारा।
आठों पहर इडग रहे आसन, थिर थाना थरपारा ॥३॥
"ईसरराम" मिल्या गुरु साचा, अमरपट्टा लिख सारा।
"पूसाराम" निर्भय की नौबत, अनुभव डंका मारा ॥४॥

भजन (२२) राग आशावरी पद

साधो भाई ! बेगम देश घर मेरा।
बेगम है कोई गम नहीं पावे, गुरु मुख ज्ञानी लखेरा ।।टेर॥
धर्मराय का वहां नहीं लेखा, ये उरला व्यवहारा।
स्वर्ग नर्क दोनों को तोड़ा, नहीं कोई काल विचारा ॥१॥
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, नहीं कोई शक्ति पसारा।
बन्ध मुक्त भ्रम गढ ढायो, नहीं कोई वेद उचारा ॥२॥
जीव ईश माया ब्रह्म नाहीं, नही कोई दश अवतारा।
सगुर्ण निर्गुण वहां नहीं कहिये, नहीं करणी करतारा ॥३॥
"ईसरराम" गुरु समर्थ स्वामी, परमधाम परसारा।
"पूसाराम" बेगम सत बेगम, अविचल अमर अपारा ॥४॥

भजन (२३) राग आरती पद

आरती करूँ गुरुदेव तुम्हारी, कर्म भ्रम दुःख दूर विडारी ।।टेर॥
जलडूबत गजराज उभार्यो, गोतम नार अहल्यातारी ॥१॥

ध्रुव प्रहलाद विभिषण गनिका, सेन सज्जन दुःख संकट टारी ॥२॥
मीरा करमा रु शिवरी द्रोपदि, व्रजउभारयो गिरिवरधारी ॥३॥
महिमा अपार कहां लग वरणूँ, शैष महेश वेद कह हारी ॥४॥
आगे संत अनंत उभारया, "पूसाराम" की अब है बारी ॥५॥

भजन (२४) राग दादरा पद

गऊ को दान समझो बड़भारी,
सुणलीजो सब नर अरु नारी ॥टेर॥
गौ है गंगा गौ है गयाजी, चार वर्ण में गौ अधिकारी ॥१॥
गौ को घृत यज्ञ क्षाह बरसावे, सुरनर आदि सबले अवतारी ॥२॥
नृग अम्बरीष दान दीयो गऊ को, सोना सींग रेश्म झूलारी ॥३॥
गौ माता जननी से है अधिका, दूध दही को पिलावन हारी ॥४॥
गौ जीवन तारे नरक उभारे, पुराण पुकारे जीव भवतारी ॥५॥
गौको तजे हरिगुण ना गावे, भुगते नरक चौरासी डारी ॥६॥
गौको कष्ट देत पुनि मारे, कोटि दान पुण्य नहि लिगारी ॥७॥
कलि को देख पृथ्वी घबराई, परीक्षित को देख गौ रूप धरी ॥८॥
"पूसाराम" अर्ज सत कहता, श्रीकृष्णजी गायां चारी ॥९॥

भजन (२५) राग दादरा पद

कुब्जा पर कृपा करि गिरधारी, सरल शरीर कियो अवतारी ॥टेर॥
मथुरा में हरि जनम पायो, पूतना मार लाल गौ चराई ॥१॥

असुर संहारण भक्त उभारण, अजगर मार बड़ी देह धारी ॥२॥
वामन रूप हो बलि को छलियो, धरातीन पैण्ड लेसारी ॥३॥
शंकर स्वामी ने काम वश कीना, मोहिनी रूप धरयो बहु भारी ॥४॥
नाग नाथ हरि गज संहारयो, कंश को मार कियो सुखकारी ॥५॥
विष्णु की कला ब्रह्मा नहीं जाणे, घट घट व्यापक अगम अपारी ॥६॥
दशूँदिशा का अन्तरयामी, ''पूसाराम'' लेहूँ बलिहारी ॥७॥

भजन (२६) राग आशावरी पद

गुरुजी! अचरज खेल रचाया।
गूँगो चढ चौबारे कुके, ज्ञानी घट समझाया।टेर॥
तुम्बी मांही तमाशा देखा, तीन लोक रीझाया।
बेटा अन्दर बाप उपजिया, जल के फूल लगाया॥१॥
माता को बेटा हुलरावे, बापू के मन लाया।
काजी मांही कुरान पढत है, पाप केरा फल पाया॥२॥
बाम्बी उलट सर्प को गिल गई, मूसा के मन भाया।
बिल्ली भूल सिंह को मारो, लौंकी के मन चाया॥३॥
पाँगल पोल बाँस पर चढिया, टूण्टा ढोल घुराया।
आँन्धो चौकस निरखण लागो, बहरा सुनत सुहाया॥४॥
दोय जणा पावड़ा तीनों, पाँचों कोश उठाया।
''पूसाराम'' दोय परचाया[१], घसकी शेर नचाया॥५॥

इति श्री पूसारामजी महाराज कृत भजन समाप्त

---

१. बिल्ली

अथश्री स्वामी पूसारामजी महाराज कृत छन्द काव्य

मिश्रित कुण्डलिया छन्द

"ईसरराम" गुरुदेवजी, पागी मिल्या सुजान।
सूता था मोह नींद में, जबे जगाया आन॥
जबे जगाया आन, सार शब्द की दीनी।
सतगुरु के प्रताप की, जाण श्रद्धा कर लीनी॥
"पूसाराम" साची कहै, गुरु चरणों विश्राम।
सब चिन्ता दूरी गई, भेट्या ईसरराम ॥१॥
"ईसरराम" गुरुदेवजी, सोहं दिया बताय।
श्वास उश्वास के माहिने, मन को लिया जगाय॥
मन को लिया जगाय, सुरत शब्द में राची।
धारा छूटी प्रेम की, गुरु गम लागी साची॥
"पूसाराम" यूँ कहत है, जान लिया निज नाम।
अज्ञान अविद्या खोय के, भेट्या ईसरराम ॥२॥
जन ईसर गुरुदेवजी, साचा मिलिया जु पीव।
भवसागर में डूबता, काढ लिया मोहि जीव॥
काढ लिया मोहि जीव, डोर शब्द की झाली।
सोजी समझ विचार, विषय वासना पाली॥
"पूसाराम" भज राम को, सतगुरु भेट्या सीव।
"ईसरराम" गुरुदेवजी, साचा मिलिया पीव ॥३॥
सतगुरु तो दरियाव है, फिर देखो चहूँ कूँठ।
हीरा बक्से मुक्ति का, दे चौरासी पूठ॥
दे चौरासी पूठ, जीव का जाल मिटावे।
मुरसिद सामरथ श्याम, सत में जाय पठावे॥

"पूसाराम" की वीनती, शिष्य हो चरणा परूँ।
लोह पलट पारस करे, सुमरो साचा सतगुरू ॥४॥
ज्ञानी सतगुरु कीजिये, अथाह भरा भण्डार।
वस्त्र हीन क्या धोवसी, भूखा चढे न अण्डार॥
भूखा चढ़ै न अण्डार, बांझ दूध ना आवे।
भृंग कीट पलटाय सम, आप के संग उडावे॥
"पूसा" बाग के माहिने, बैठ समझ मौजा मानी।
हर्ष शोक व्यापे नहीं, सतगुरु करले ज्ञानी ॥५॥
चार वर्ण का नाथ हो, सब को जाणण हार।
विरद बढ़ावण सांवरा, सन्तन के रखवार॥
सन्तन के रखवार, द्विज अजा को तारयो।
सहाय करी प्रहलाद की, पिता हिरण्यकुश मारयो॥
रज्जब को दादू मिले, करी पुरुषार्थ चार।
चढ़ी खुमारी नाम की, "पूसा" हृदय धार ॥६॥
सब घट सांई एक है, वाक चाल में फेर।
नाना भांति बोल है, पूसाराम कहि हेर॥
"पूसाराम" कहि हेर, ऐसा बाजीगर जाली।
कईयों के छायो टापरो, कईयों के रह गयो हाली॥
जाण्यो जाने जाणसी, ऐसो मोटो रजब।
मीरा पी गई जहर को, अमृत होय गयो सब ॥७॥
अपना अपना लोभ की, बात करे सब लोग।
काल विचार सु हंसीयो, सिर पर भँवे जु रोग॥
सिर पर भँवे जु रोग, मन माया में भाता।
शुक्रत भज्यो ना राम, रह्या पाप का खाता॥

कोडि जोड़ि ब्याज से, सभी पदार्थ सपना।
"पूसा" चौरासी भोगसी, कर्म कमाया अपना ॥८॥
माया है जहाँ पाप है, जहाँ पाप तहँ काल।
"पूसा" समझ विचार के, मन विषया को जाल॥
मन विषया को जाल, आनिश्चित कर के जाणी।
संशय शोक मिटाय के, सुरत भजन में आणी॥
सतगुरु सुमिरण सत है, कोई जाणसी भाया।
सोहं सत स्वरूप में, सदा रहो निरमाया ॥९॥
संशय बड़ो शरीर में, करे भजन में भंग।
मोह फांसी को काटिये, जब ही लागे रंग॥
जब ही लागे रंग, सत शब्दां लिव धार।
कुल की छोड़ो प्रीतड़ी, ल्यो सतगुरु की सार ॥
सांचे राजे रामजी, ध्यान धरो थे एसो।
निर्भय "पूसा" रूप में, हर्ष शोक नहीं संशो ॥१०॥
हाथ पांव दे खुद खुदा, नीकी कीनी जान।
आठपहर हजरत रटो, क्यों भूलो रहमान॥
क्यों भूलो रहमान, जवाब साहब को देना।
तज विकार गुमराह को, नाम मालिक का लेना॥
"पूसा" परवरदिगार पा, मुरशिद पकड़ा बाथ।
जिद तजो अभिमान को, पावो हाथो हाथ ॥११॥
नारी निद्रा काल की, करे खुवारी बोत।
स्वप्ना में व्याकुल करे, लगे ध्यान में छोत॥

लगे ध्यान में छोत, इन्हीं से रहिये दूरा।
जो चाहो कछु काज तो, भजन करो भरपूरा॥
"पूसा" जाग जग जीत ले, जो सूता सो हारी।
करे खुवारी काल की, बहुते निन्द्रा नारी ॥१२॥
लख साधु या जगत में, नींद सरीखी न चोर।
चलती रसना मेट दे, लगी मिटावे डोर॥
लगी मिटावे डोर, घणी नारि लजाली।
छाने चुपके आय, नाम से मेटे ताली।
सुमिरण के आडी फिरे, ऊपर नाखे जादू॥
"पूसाराम" साची कहै, समझावे सोई साधू ॥१३॥
जालो मुख अज्ञान को, करियो न हरि से हेत।
मान बड़ाई कारणे, कालर बायो खेत॥
कालर बायो खेत, कहां नीपजे ली साख।
करी न हरि गुरु बंदगी, पड़े जमों की राख॥
सत संगत लागी नहीं, कट्यो न मन को जाल।
"पूसा" यम ले जीव को, किस विध छोड़े बाल ॥१४॥
औ मन राजी विषय में, कबहु न माने काण।
सत असत निश्चय नहीं, पड़े कर्मों में जाण॥
पड़े कर्मों में जाण, मान मान मन स्याल।
लख चौरासी योनि में, लैसी कौन संभाल।
"पूसाराम" उण पुरुष को, बार बार दूँ धन।
शिक्षा दे सुगरो करे, समझावे औ मन ॥१५॥

मनकी गति गुलाम है, पल पल करे खराब।
सतगुरु तो ऐसी कही, भिन्न भिन्न करके ढाब।
भिन्न भिन्न करके ढाबे, ढाब रे नाम के माहि॥
सोजी समझ विचार ले, और ठिकाना नाहि।
और ठिकाणे हार है, गुरु चरणों में रति।
"पूसा" अंग आकार बिन, झीणी शुक्ष्म गति ॥१६॥
झूँठ कपट अंहकार से, मत करजे ना यार।
सत शब्दां लागा रहो, तब उतरेगा पार ॥
तब उतरेगा पार, यारी साहब से कीजे।
संशय शोक मिटाय के, धार अमृत की पीजे॥
रतन अमोलख मानखो, मिल्यो मूल वैकुण्ठ।
"पूसाराम" अठ पहर भज, छोड़ पराई झूण्ठ ॥१७॥
मद पीवे माटी भखे, करमों में हुशियार।
हंसों की बांतों करे, पापों का अधिकार॥
पापों का अधिकार, चाल हंसों की चाले।
बातों करो हजार जो, रह्या हाथ जो खाले॥
काग अज्ञानी जीवड़ा, पड़े नरक में जद।
"पूसा" सीख न मानता, मूर्ख पीवे मद ॥१८॥
संत हंस इक चाल है, नीर खीर में जोय।
निज खीर हंसा पीये, नीर पीये ना कोय॥
नीर पिये ना कोय, हंस विवेकी छाणी।
विषया तजे विकार, आहि रमझ निरवाणी॥

चेतन से चेतन मिल्या, निर्भय रहे महन्त।
डिगे न डोले अडिग रह, "पूसा" समझे सन्त ॥१९॥
भेष साधु के आन्तरो, ज्यों धरती असमान।
भेष विषय रस भोगता, साधु भजे रहमान॥
साधु भजे रहमान, भजन में हरदम गाढ़ा।
निर्भय भया नचीत, सत शब्दां से ठाढा॥
"पूसाराम" उन सन्त के, रति न रहवे लेष।
पाखण्डी प्रलय बहे, झूँठा लेवे भेष ॥२०॥
नदी मोती ना देखिया, झूँठी करे जु बात।
स्वप्ने नग पायो नहीं, पत्थर वर्षे दिन रात॥
पत्थर वर्षे दिन रात, कहां ते निपजे अन्ना।
रतन सरीखो मानखो, मिल्यो पदार्थ धन्ना॥
"पूसाराम" सांची कहै, मत खो जो ना मदी।
माणक पावे सहज में, मिले समुद्र नदी ॥२१॥
खाली कुम्भ बोले घणा, जासे सरे न काम।
भरिया सो बोले नहीं, जा पर राजी राम॥
जा पर राजी राम, उच्चारे सत की बातां।
गुरु वचनों चल ठहरता, नहीं कपट नहीं घातां॥
"पूसा" सत की डोर गह, तजिये झूँठी जाली।
उन्मुनी में ओलखो, मत बकजो ना खाली ॥२२॥
बास लेगा जी नासिका, अरू जिह्वा से स्वाद।
चक्षु निरखे रूप को, श्रवण शब्द सु नाद॥

श्रवण शब्द सु नाद, शीत उष्ण त्वचा पोके।
शब्द स्पर्श रस रूप गन्ध, सन्त शूरा जन रोके।
विरला हरिजन पावसी, सत चित आनन्द खास।
ब्रह्मस्वरूप "पूसा" लखो, तज अभिमानी बास ॥२३॥
सुषुमन सुमिरण सत है, जो कर जाणे कोय।
नहीं चन्द नहीं सूर है, जाँ बिच मनवा गोय॥
जाँ बिच मनवा गोय, सुरत शब्द में राची।
चेतन चौकी बैठ के, रणुकार धुन माची॥
"पूसाराम" झगड़ा मिटे, रति न रह दुःख मन।
इडा पिंगला पलट के, मध्य चले सुषुमन ॥२४॥
गगन मण्डल के सहर की, जाणे सन्त सुजान।
कर बिन बाजा घुरत है, राग सुने बिन कान॥
राग सुने बिन कान, अंग बिन नाचे नारी।
आंधा देखे खेल, प्रीति कर निरखे प्यारी॥
ख्याल देख "पूसा" कहै, सत शब्दां की लगन।
सन्त समझ्या सो जाणसी, जोया ब्रह्म गगन ॥२५॥
लखिया चाहै ब्रह्म को, सतगुरु करजे खोज।
बिन सतगुरु पावे नहीं, अटल पुरुष की मौज॥
अटल पुरुष की मौज, भाण बिन मिटे ना राती।
भया ज्ञान प्रकाश, अन्धेरा रहे न जाती।
"पुसाराम" थिरता भया, जत मत पूरा रखिया।
शुद्ध स्वरूप लय होय, वचन गुरु का लखिया ॥२६॥

आसुरी संपति अज्ञान की, नरकों की अधिकार।
देवी संपति ज्ञान की, ले अधिकारी सार ॥
ले अधिकारी सार, इन्हीं में फिरेज नाही।
मोक्ष स्वरूप में गल रह्या, नमक जल के माही॥
"पूसा" शुद्ध स्वरूप में, नहीं कोई षट् कसूरी।
ब्रह्म अखण्डी है सदा, त्याग संपति आसुरी ॥२७॥
त्याग भाग जीव ईश को, भजन करो निष्काम।
बिन गुरु मुख पावो नहीं, अटल पुरुष की धाम।
अटल पुरुष की धाम, पारब्रह्म लिव लावो॥
रहता सूँ रत होय, बहुरि जन्म नहि आवो॥
पाला गल पानी भया, क्या सुता क्या जाग।
"पूसा" लहर समुन्द्र में, मिली भाग लख त्याग ॥२८॥
आन आपसी जाल है, लख चौरासी खाल।
पाषण नौका नाचले, केवल दिशा मन भाल ॥
केवल दिशा मन भाल, आप स्वरूप कर लेवे।
अणधड़ अक्षय अजीत है, निराकार अकर्ता रहवे॥
"पूसा" धरिया काल गह, निर्बन्धन निर्मान।
सत चित आनन्द ब्रह्म भै, पार लंघत है आन ॥२९॥
अविनाशी निज पाक है, सब उन के आधार।
पांच तंत गुण तीन ना, निराकार की सार॥
निराकार की सार, सार सतगुरू से लहिये।
भ्रम कर्म को छेद के, सत चेतन गम रहिये॥

वेद सन्त को अर्थ है, ज्ञान गंगा सब न्हासी।
"पूसा" गुरु की महर से, ज्ञान पाय अविनासी ॥३०॥
बीस भाग करूँ केश के, दश भाग करूँ केश।
पांव न टिके पिपीलिका, ऐसी झीणी रेश॥
ऐसी झीणी रेश, मुख से कही न जावे।
गूँगे को स्वप्नो भयो, आप आप लख पावे।
"पूसा" जन्म न मरण है, कोई मत करजो रीश।
रति एक झूँठीं नहीं, यह तो विश्वाबीस ॥३१॥
पांच कोश मुझ में नहीं, पाप पुण्य नहीं पास।
एकादश इन्द्रिय नहीं, अर्ध उर्ध नहीं स्वास॥
अर्ध उर्ध नहीं स्वास, अजन्मा कहिये स्वामी।
गरक भरया चौफेर में, दशूं दिश अन्तरयामी।
"पूसा" लघू न दीर्घ है, क्यों नहीं मानो सांच।
जनम मरण हद जाल ना, नहीं कोश है पांच ॥३२॥
घट घट पूरण ब्रह्म है, व्यापक अन्दर बार।
आदि अन्त मध्य है नहीं, नहीं पुरुष नहीं नार।
नहीं पुरुष नहीं नार, नितोनित रहे हमेशा।
पानी में झलका पड़े, रवि लिपे ना लेशा॥
नाम रूप "पूसा" नहीं, सत चेतन रट रट।
बाहिर भीतर बोलता, लख पूरण घट घट ॥३३॥
निर्बन्धन निर्लेप है, अगम निगम से पार।
अन अक्षर कथनी नहीं, बेरंग अखय अपार ॥

बेरंग अखय अपार, सच्चिदानन्द अजन्मा होई।
तीनों काल अबाध है, नित रहत निर्दोई॥
निश्चय "पूसाराम" लख, छूटे अविद्या फन्द।
निर्भय रहो निज रूप में, निरमाया निर्बन्द ॥३४॥

कवित छन्द

भव सिन्धु सिन्धु भारी, जामे डूबे नर नारी।
बहुत खुवारी याते, कैसे लंघों पार है॥
ज्ञान की कटारी लीजे, मन को भी मार दीजे।
आतम स्वरूप माहि, चित निराधार है॥
अकल कला में नहीं, घट घट बोले सांई।
जती सती लीजो मान, सत सत सार है॥
सब संत खूब गायो, "पूसाराम" पीव पायो।
ब्रह्म को स्वरूप सोई, अगम अपार है ॥३५॥
नारी हन्दा नैण ऐसा, छुरी सी कटारी जैसा।
ये तो मूढ लख लेहू, चौरासी का मूल है॥
शंकर स्वामी को मोह्यो, इन्द्र रु चन्द्र को बोयो।
कामदेव बलकारी, पड़े शिर धूल है॥
ज्ञान रू वैराग माहि, भिन्न भिन्न गायो वांही।
नारी अंग लाय कर, रह्यो नित शूल है॥
सतसंग लेवो सार, शील रु शंतोष धार।
"पूसाराम" नाम नौका, और सो फिजूल है ॥३६॥

इति श्री पूसारामजी महाराज कृत वाणी-छन्द समाप्त

पूसारामजी महाराज की महिमा

पूसारामजी को महापुरुषों में नाम,
करिया सुखरत कई ऐ काम।
रोग दोग की देता दवा,
परमार्थी करी घणी ऐ सेवा॥
भूत पलीत को झाड़ो देता,
पईसो टको कछु नहीं लेता।
धरियो तनमन सूं ईश्वर को ध्यान,
जिण सूँ जग में होवे मान॥
हा तपस्या में चोखा तपसी,
सालाना होवे है बरसी।
घणा महापुरुष धाम पे आवे,
हिलमिल प्रभू का सब गुण गावे॥
दाँतड़ा महन्तजी आज अठे आया,
सुणल्यो उपदेश सुधारो काया।

आज है महापुरुषों में आँकी गिणती,
हाथ जोड़ करूँ आंने मैं विनती॥
जोधपुर बिराजे श्री रामप्रकाश,
हरीरामजी की गादी को करियो विकास।
विद्वानों में अच्छा है विद्वान,
जिण सुं ओंकीं होवे सम्मान॥
रामजीवणजी महाराज की धाम है बस्सी,
सुण सुण उपदेश होवे सब खुशी।
संत पधारया अठे मोहनराम,
कर दियो धाम को चोखो काम॥
सातवों महिनो दो हजार की साल,
आया है सन्त, कर दिया निहाल।
"रामकरण" गाई संतों की महिमा,
जोड़ूं हाथ करूँमैं घणी खम्मा॥

- कवि रामकरण टाक, चेनार (नागौर)

प्रकाशन में सहयोगी दानदाता सूची

श्री पंचाराम परिहार, पुत्र जवारारामजी परिहार, पोस्ट बड़नोखा, नागौर

श्री कस्तूराराम, पुत्र सुरजारामजी जोगीना, पोस्ट बू वाया नागौर-341001

श्री रामदेवजी बड़ोला, पुत्र जयरामजी बड़ोला, पोस्ट मुन्दियाड़, नागौर

श्री मिश्रीलाल गोयल, पुत्र हरसुखरामजी गोयल, पोस्ट बूढी वाया वासनी, नागौर

स्वर्णकार श्री करोड़ीमल, पुत्र पूसारामजी कड़ेल, तिगरी बाजार, नागौर

सोने-चांदी के फैन्सी गहनों के निर्माता एवं डाईकार

सिद्धार्थ मेडिकोज, राजकीय अस्पताल के सामने, नागौर-341001

श्री मुनाराम कटारिया, पुत्र पाँचारामजी कटारिया, पोस्ट रूपासर बास, ताऊसर

श्री मदनराम, पुत्र जीवणरामजी मेघवाल, पोस्ट डेहरू, नागौर-341001

श्री मांगीलाल पटवारी, पुत्र नैनारामजी गोदा, पोस्ट कालियास, नागौर

श्री जोगाराम, पुत्र कस्तूरारामजी बांसीवाल, भोपालगढ़

श्री मूलाराम अर्टवाल, पुत्र कस्तूरारामजी, पोस्ट साडोकरन, नागौर

श्री हरदीन चौधरी, पुत्र तेजारामजी बेनीवाल, पोस्ट पीतासिया, नागौर

श्री प्रवीणकुमार, पुत्र तेजारामजी सिंघाड़िया, पीपाड़ सिटी (जोधपुर)

श्री झूमाराम कटारिया, पुत्र भेरारामजी कटारिया, पोस्ट नाड़सर (भोपालगढ़)

श्री हुक्माराम देवड़ा, पुत्र बस्तीरामजी देवड़ा, रातियो की ढाणी, भोपालगढ़

श्री गोरधनराम कटारिया, पुत्र श्री झूमररामजी, पोस्ट रूपासर बास, ताऊसर

श्री मंगलाराम कटारिया, पुत्र श्री गंगारामजी, पोस्ट ताऊसर-341001

श्री बाबूलाल गोदा पुत्र श्री चन्दारामजी गोदा, पोस्ट पालड़ी रणावतां (भोपालगढ़)

श्री मांगीलाल सरपंच पुत्र बुधारामजी खुड़ीवाल, पोस्ट भाकरोद, नागौर

श्री उत्तम गुरु आरती

आरती! गुरु की सदा सुखदाता, महिमा अगम वेद यों गाता ।टेर॥
आपा मेट आप को लखता, सतगुरु सोई सत का वकता ॥१॥
ब्रह्म स्वरूप ब्रह्म का वेता, ज्ञान विज्ञान दान नित देता ॥२॥
सतगुरु अगम निगम का ज्ञाता, भिन्न भिन्न अर्थ सेन समझाता ॥३॥
दे उपदेश रू भ्रम मिटाता, भवसागर से पार पठाता ॥४॥
"उत्तमराम" संत उलट समाता, उलट समाय परम पद पाता ॥५॥

श्री अचलोत्तम सन्त आरती

आरती! सनातन सन्त की कीजे, जाके वचन सुधा रस पीजे ।टेर॥
सन्त गुरु पर ब्रह्म सदाई, यामे रंच भेद नहिं काई ॥१॥
ज्ञान सुनाया भ्रम भगाया, निज स्वरूप अचल दरसाया ॥२॥
सतसंग खोली अनुभव बोली, नाना वचन सिंधु वत छोली ॥३॥
जीव जगाये संकट कटाये, भवसागर भव फन्द मिटाये ॥४॥
"रामप्रकाश" नमो सन्तन को, सत्य लखाया ब्रह्म सत धन को ॥५॥

उत्तम आश्रम जोधपुर का प्रसिद्ध उत्तम साहित्य

१. आचार्य सुबोध चरितामृत — श्री सम्प्रदाय शोद्ध ग्रन्थ ११८ गुरु शिष्य परम्परा पीढिदर्शन
२. वेदान्त भूषण वैराग्य दर्शन- भृतहरि वैराग्य शतक, भाव रसामृत, बोध प्रकाश, तीन ग्रन्थ संग्रह
३. सन्तदास अनुभव विलास — श्री दान्तड़ा धाम गुरु स्मृति वाणी
४. हरिसागर — स्वामी हरिरामजी वैरागी कृत
५. वाणी प्रकाश — छः महात्माओं की अनुभव वाणी
६. अचलराम भजन प्रकाश — ४२५ भजन, सैलाणी
७. श्री सुखराम दर्पण (शताब्दी ग्रन्थ) — ८४ भजन की अचलोत्तम ज्ञान पियूष वर्षणी टीका
८. उत्तम वाणी प्रकाश (परिशिष्ठ भाग) — वेदान्त सारणी, आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द कोष
९. उत्तमराम भजन प्रकाश — (ग्लेज कागज) तृतीयावृति
१०. अवधूत ज्ञान चिंतामणि — झूलना, इन्दव, दोहा, चौपाई
११. पिंगल रहस्य (छन्द विवेचन) — काव्य-षोड्श कर्म सचित्र विधि परिवर्द्धित संस्करण
१२. भारतीय समाज दर्शन — वर्ण व्यवस्था का प्राचीन एवं अर्वाचीन रूप
१३. नशा खण्डन दर्पण — २६ नशों की त्याग विधि, इतिहास, आदर्श शिक्षा
१४. विश्वकर्मा कला दर्शन — विविध वेदान्त शब्दकोष, प्रश्नोत्तर, कला, मुहूर्त, पूजन अनुच्छेद
१५. रामप्रकाश शब्दावली — प्रश्नोत्तर भजन, वेदांत पदार्थ कोष
१६. रामप्रकाश शब्द सुधाकर — ७ द्वीप, ४६ खण्ड सहित अनुपम ज्ञान, गर्भ चेतावनी
१७. उत्तमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका — बेजोड़ गुरु-शिष्य के अनुभव २५१ भजन
१८. रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह — २१ रक्षाएँ, साधन विधि सहित
१९. गुढार्थ भजन मंजरी — राश्यार्थ एवं कूटार्थ २१६ दोहा, सटिप्पणी
२०. दैनिक चिन्तन डायरी, मनन योग्य, ३६५ दिनों में उत्तमोपदेश, भारतीय कैलेण्डर सहित नित्य पठन
२१. आध्यात्मिक नीति निबन्ध — शिक्षाप्रद, विविध नीति लेख पत्र
२२. स्वयं सिद्ध श्रीराम नव स्तोत्र — मानस कामना सिद्ध, नित्य पाठ
२३. देवीदान सुगम उपचार दर्शन — आयुर्वेदिक औषधि कल्पतरू
२४. रत्नमाल चिन्तामणि (प्रथम भाग) — छः सौ प्रश्नोत्तर, उपदेश दोहा
२५. रामायण मन्त्र उपासना — रामायण की सिद्ध चौपाईयाँ
२६. उत्तम बाल योग रत्नावली — कर्म, स्वर, ज्योतिष का योग
२७. स्वाध्याय वेदान्त दर्शन — सारुकावलि, विचारमाला, विचारचन्द्रोदयादि मूल ५ पाठ संग्रह ग्रन्थ
२८. सुगम चिकित्सा (प्रथम भाग) — सरल चिकित्सा-स्वामी अचलरामजी द्वारा लिखित
२९. सुगम चिकित्सा (द्वितीय भाग) — स्त्री-पुरुष गुप्त रोगों पर इलाज
३०. उत्तमराम अनुभव प्रकाश — ३२१ भजन, वेदान्त
३१. रामदेव गप्य दर्शन — पोल में ढोल १२५ प्रश्न, उपासना का अनावरण
३२. उत्तम बाल ज्योतिष दोहावलि — कण्ठस्थ करने में सुलभ ७०० दोहा छन्द

सम्पर्क करें :- उत्तम आश्रम, कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर-३४२००६

अपने शहर के प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता से खरीदें या डाक से मंगवाईये।